सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 20 • अंक 8 • नवम्बर 2023 • मूल्य : 20 रु.

|| श्री मुनिसुव्रत-स्वामिने नमः ||

|| दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिभ्यो नमः ||

चेन्नई महानगर की धन्यधरा पर

कुशल बाग, वेपेरी के प्रांगण में नवनिर्मित

श्री मुनिसुव्रत स्वामी मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाड़ी के

महोत्सव प्रारंभ 3rd December 2023

प्रतिष्ठा शुभ दिवस 8th December 2023

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में

पधारने का हृदय से आमंत्रणम्

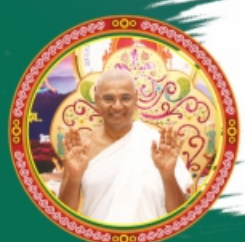

✤ मनमोहक निश्रा ✤

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

आयोजक–निमंत्रक

श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट, कुशल बाग, वेपेरी, चेन्नई

पदम टाटिया, संयोजक 9840842148

आवास हेतु संपर्क – 7305971544/9840121544/9444539200

Watch live program on nemikantiMani

चेन्नई में लगा ठाठ

सिवांची संघ में पदार्पण

चिंतादरी पेठ में उत्थापन–चल प्रतिष्ठा

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

कसिणं पि जो इमं लोयं पडिपुन्नं दलेज्ज एक्कस्स।
तेणावि से ण संतुस्से इइ दुप्पूरए इमे आया।।

यदि कोइ व्यक्ति किसी को समृद्धि से परिपूर्ण यह पूरा लोक भी दे दें, तो भी वह उससे संतुष्ट नहीं होगा। जीव की तृष्णा इतनी दुष्पूर होती है।

Even if the whole rich world is given to one man, he will not be satisfied with that. It is extremely difficult to get all the desired of a man fulfilled.

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 20 अंक : 8 5 नवम्बर 2023 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष - उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : श्रीमती पुष्पा ए. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653

रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

मोबाइल : 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	धूलिया	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	धूलिया जून	06
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
5. प्रिय आत्मन्	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
6. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	09
7. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
8. श्री हरिबल केवली	मुनि समयप्रभसागरजी म.	12
9. बलिदान	उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म.	14
10. खरतरगच्छ कीजन्म स्थली पाटण की महाप्रभावशाली दादावाडी	मुनि विरक्तप्रभसागरजी म.	15
11. पाटण की शान : कुशल गुरु	हेमलता जैन, तेनाली	16
12. कुशलधाम पाटण	हेमलता जैन, तेनाली	16
13. अधूरा सपना	पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	17
14. अनुभूति-गुरु विरह की !	मुनि मयूखप्रभसागरजी म.	23
15. दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि	नीलम जैन, बाड़मेर	25
16. समाचार दर्शन	संकलित	27
17. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

विशेष दिवस

- 15 नवम्बर भाई दूज
- 16 नवम्बर श्री सुविधिनाथ केवलज्ञान कल्याणक, बिछुड़ो समाप्त प्रात: 03.01
- 17 नवम्बर दादासाहेब मेला, नवरंगपुरा, अहमदाबाद
- 18 नवम्बर ज्ञान पंचमी, आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरि पुण्यतिथि, सैलाना
- 19 नवम्बर चौमासी अट्ठाई प्रारंभ, श्री केशरमुनिजी म.सा. पुण्यतिथि, मुम्बई
- 20 नवम्बर पंचक प्रारंभ 10.08
- 24 नवम्बर श्री अरनाथ केवलज्ञान कल्याणक, पंचक समाप्त 16.01
- 26 नवम्बर चातुर्मासिक प्रतिक्रमण
- 27 नवम्बर कार्तिक पूर्णिमा, सिद्धाचल तीर्थ यात्रा, अस्वाध्याय दिवस
- 28 नवम्बर अस्वाध्याय दिवस
- 30 नवम्बर दादा श्री निजकुशलसूरि 743 वाँ जन्मोत्सव
- 02 दिसम्बर श्री सुविधिनाथ जन्म कल्याणक
- 03 दिसम्बर श्री सुविधिनाथ दीक्षा कल्याणक
- 04 दिसम्बर आ. श्री जिनकान्तिसागरसूरि 38वीं पुण्यतिथि, जहाज मन्दिर, माण्डवला
- 07 दिसम्बर श्री महावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
- 08 दिसम्बर श्री पद्मप्रभस्वामी मोक्ष कल्याणक
- 11 दिसम्बर पाक्षिक प्रतिक्रमण

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

नवप्रभात

व्यक्ति जैसा होता है, उसके लिये सारी दुनिया वैसी ही होती है। सरल व्यक्ति के लिये दुनिया सरल है तो माया से पूर्ण व्यक्ति को दुनिया मायावी नजर आती है।

बाहर से मार्गदर्शन मिल सकता है, पर भीतर की सफाई तो स्वयं को ही करनी होती है। व्यक्ति बाहर से कितना भी दिखावा करें, भले लाखों आडम्बर अपने ऊपर ओढ़ लें, लेकिन यदि अन्तर में अशुद्धियाँ और मलीनता है, चित्त अशांत और अस्थिर है तो कोई भी बाहरी वातावरण सच्चा सुख और शांति नहीं दे सकता।

धन, वैभव, सत्ता कितनी भी हो, वे क्षणिक सुख दे सकते हैं। थोडी देर के लिये अच्छा लगता है। अहंकार को पोषण मिलता है। पर स्थायी सुख और शांति का अनुभव इनसे नहीं हो सकता।

शांति प्राप्त करने में इनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति का कोई प्रभाव नहीं होता। क्योंकि शांति आभ्यन्तर अनुभव है। उसे प्राप्त करने के लिये अपनी यात्रा की दिशा को मोडना होगा।

जैसे एक टंकी है। उससे पूरे मोहल्ले को पानी मिलता है। यदि उस टंकी में दुर्गंध युक्त कचरा आ जाये... तो पूरे मोहल्ले में अशुद्ध पानी पहुँचेगा।

टंकी को साफ कर दिया जाये तो पूरे क्षेत्र में शुद्ध पानी पहुँचेगा।

ऐसे ही पहले अपने अन्तर हृदय को शुद्ध करना होगा। जैसे शरीर को प्रतिदिन साफ करते हैं। उसकी स्वच्छता का ध्यान रखते हैं। उसी प्रकार हमें अपने अन्तर् हृदय की स्वच्छता का ध्यान रखना होगा।

न मालूम कितना कचरा हमने अपने अन्तर में जमा कर रखा है। उसे दूर करने के बजाय और ज्यादा बढाने में लगे हैं। कचरे को हमने अहं पोषण का निमित्त बना दिया है।

इसी जीवन में अपने आन्तरिक कचरे को दूर करने में हम सक्षम हो सकते हैं। यह सुविधा और किसी जीवन में नहीं है।

सार्थक करना है प्राप्त क्षमता को...!

जिनमहोदयसागरसूरि

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 61

धूलिया

–उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

महाराष्ट्र राज्य में सात लाख की बस्ती वाला जिला है धूलिया। 700-800 जैन श्वेताम्बर परिवार की बस्ती वाले इस नगर में जूना मंदिर के नाम से विख्यात पूर्वमुखी जिनालय है, जिसके मूलनायक शीतलनाथ तथा आजू-बाजू संभवनाथ व वासुपूज्य स्वामी विराजमान हैं। इस जिन मंदिर के भूमिदाता सेठ श्री मोतीलालजी गोपालदासजी शहा है।

इस विशाल शिखरबद्ध तीन मंजिले मंदिर में मूलगंभारे के दाहिने पीछे वाली दीवार के समानान्तर गोखले में दो जोड़ी दादा गुरुदेव के चरण प्रतिष्ठित हैं।

दादा गुरुदेव जंगम युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि तथा कलिकाल कल्पतरु दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि के समचौरस शिलाखंड में उत्कीर्ण चरणयुगल मंदिर प्रतिष्ठा के समय से विराजमान हैं। उन चरणों पर वि.सं. 1985 का शिलालेख खुदा हुआ है। उन दोनों चरण पादुकाओं की लम्बाई 17।। / 45 से.मी. तथा चौड़ाई 9.75।। / 25 से.मी. है। जिनालय के रंगमंडप में पद्मावती देवी भी प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य मुनिराज श्री कान्तिसागरजी महाराज की पावन निश्रा में संपन्न हुई थी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार इसकी पुनः प्रतिष्ठा मुनि श्री विचक्षणविजयजी म. की निश्रा में हुई।

जिनालय के समीप ही जैन भवन नामक धर्मशाला है जिसमें 500 लोग ठहर सकते हैं। साधु-साध्वी जी के लिये समीप ही आराधना भवन है। आर्यबिलशाला तथा भोजनशाला यहाँ कायमी चलती है।

यहाँ पर साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की प्रेरणा से संस्कार वाटिका पाठशाला स्थापित की गई है, जिसमें 400 से अधिक बालक बालिकाऐं धार्मिक अभ्यास करते हैं। हर रविवार को सामूहिक अष्ट प्रकारी पूजा पढाई जाती है।

धूलिया नगर से मनमोहन पार्श्वनाथ नेर तीर्थ 30 कि.मी., बोरकुल जैन मंदिर 20 कि.मी., फागना जैन मंदिर 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस नगर में पाटिल चौधरी जाति मुख्य रूप से निवास करती है।

इस मंदिर का प्रबंधन श्री शीतलनाथ भगवान संस्थान, श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक देरासर करता है। सुप्रसिद्ध चमत्कारी श्री बलसाणा तीर्थ का संचालन भी यही संस्थान करता है। यह स्थल श्री संघ का मंदिर, जूना बड़ा मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है।

पता : श्री शीतलनाथ भगवान देरासर

गली नं. 2, तेली गल्ली,, धूलिया - 424 001 (दूरभाष : 02562-238091)

धूलिया (जूना) - 62

परमात्मा महावीर की शासन परम्परा अविच्छिन्न रूप से आज तक चली आ रही है। अनेक गच्छ हुए, हर गच्छ में शासन प्रभावक आचार्य हुए हैं परन्तु ऐसे आचार्य तो मात्र चार ही, वे भी सुविहित पक्ष खरतरगच्छ की परम्परा में ही हुए हैं, जिन्हें दादा गुरुदेव के नाम से संबोधित किया जाता है।

यह संबोधन शब्दों का नहीं, भावनाओं और वात्सल्य से परिपूर्ण एवं कृतज्ञता से भरे हृदय का है। इसी कारण आज दादा गुरुदेव की दादावाड़ियाँ भारत के हर कोने में विराजमान हैं।

महाराष्ट्र राज्य में बलसाणा तीर्थ से मात्र 50 कि.मी. की दूरी पर बसा धूलिया नगर दादा गुरुदेव के भक्तों का नगर है।

जूना धूलिया क्षेत्र की बस्ती के मध्य में संकरी गली में परमात्मा महावीर स्वामी का मंदिर है। पहले माले पर 50 वर्ष प्राचीन वास्तुकला के अनुरूप ईंटों के गेटर पर लगभग 20 गुणा 20 फुट का जिनालय है, जिसमें मूलनायक श्री महावीर स्वामी विराजमान हैं। अन्य चार प्रतिमा जी हैं जिसमें से दो प्रतिमाएँ दादा गुरुदेव की हैं, जो मंदिर प्रतिष्ठा के समय प्रतिष्ठित की गयी हैं।

गंभारे के द्वार पर कांच का कार्य किया गया है एवं भमती के गंभारे की दीवारों पर वर्धमान भगवान के 27 भवों का कलात्मक चित्रण किया हुआ है। रंगमंडप में तीर्थों की पेंटिंग की गयी है।

रंगमंडप के पूर्व दिशा में स्थित द्वार के दोनों तरफ दो गोखले निर्मित हैं। जिनमें से एक गोखले में यक्ष की प्रतिमा विराजमान है। दूसरे गोखले में खरतरगच्छाचार्य श्री जिनरंगसूरि द्वारा प्रतिष्ठित तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी म.सा. की श्वेत मकराने की 22 वर्ष प्राचीन 14.75 इंच / 39 से.मी. लम्बी एवं 9.5 इंच / 25 से.मी. चौड़ी प्रतिमा बिराजमान है।

मध्य में स्थित प्रतिमा के निकट में ही दादा श्री जिनकुशलसूरि जी के 3.5 इंच / 9 से.मी. लम्बे एवं 3 इंच / 8 से.मी. चौड़े चरण भी प्रतिष्ठित हैं। चरण लघु आकार में होने से शिलालेख अपठनीय है। वि.सं. 2041 में इनकी प्रतिष्ठा की गयी थी।

साध्वी श्री जिन श्री जी म. की पावन प्रेरणा से दादा गुरुदेव की प्रतिमा स्थापित की गयी।

रंगमंडप के बाहर बरामदे में सीढ़ियों के पास दो गोखले हैं जिनमें एक में मणिभद्र जी की प्रतिमा स्थित है। जिनालय के नीचे (तल माले में) उपाश्रय है।

अमीझरा शीतलनाथ मंदिर एवं कुशल गुरु दादावाड़ी यहाँ से मात्र 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

जूना धुलिया जैन मंदिर के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर-दादावाड़ी का प्रबंध श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर ट्रस्ट करता है।

पता : श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर

सुभाष नगर, जूना धूलिया, पो. धूलिया - 424 001 (महाराष्ट्र), दूरभाष : 02562-238213, 9822667695

87

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

सन् 1963 विक्रम संवत् 2020 का जयपुर नगर का चातुर्मास ऐतिहासिक रहा। पूज्यश्री के सार्वजनिक प्रवचनों का वातावरण अनूठा रहा था। पूज्यश्री का प्रवास था– इमली वाली धर्मशाला में और प्रवचन होता था धर्मशाला के ठीक सामने शिवजीराम भवन में!

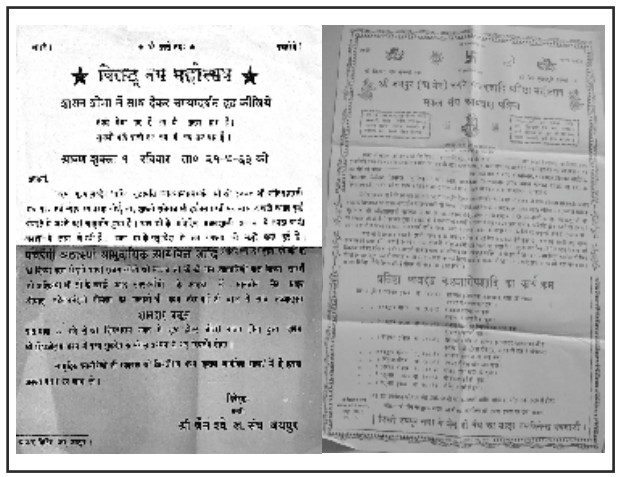

यह भवन यहाँ लम्बे समय तक बिराजे रहे यतिप्रवर श्री शिवरामजी की स्मृति में खरतरगच्छ श्री संघ द्वारा निर्मित था। शिवजीराम भवन का विशाल हॉल खचाखच भर जाता था। रविवार को तो खडे रहने की जगह नहीं मिलती थी।

गुरु महाराज के साथ उनके आजीवन साथी पूज्य मुनि प्रवर श्री दर्शनसागरजी म. थे। पूज्य आचार्य श्री जिनकृपा चन्द्रसूरि समुदाय के विद्वान् मुनिराज श्री मंगलसागरजी म. का चातुर्मास भी स्वास्थ्य लाभ की अपेक्षा से जयपुर में ही था।

साथ ही प्रवर्तिनी वर्या श्री ज्ञानश्रीजी म. श्री विनयश्रीजी म. श्री कल्याणश्रीजी म. आशु कवयित्री श्री सज्जनश्रीजी म. आदि 11 साध्वीजी म. का चातुर्मास भी इमली वाली धर्मशाला के पास वाली धर्मशाला में था।

चतुर्विध संघ के इस दृश्य का साक्षात्कार करने बडी संख्या में लोग उमडते थे।

चातुर्मास तप, जप, त्याग व शासन प्रभावना के कई कार्यों के साथ संपन्न हुआ था। इस चातुर्मास में पंचरंगी अट्ठाईयाँ व सामूहिक आयंबिल की अनूठी आराधना हुई थी।

प्रवर्तिनी श्री सज्जन श्रीजी म.सा. की शिष्या उस समय के बाल साध्वी व वर्तमान प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने अट्ठाई की तपस्या की थी। सभी तपस्वियों का वरघोडा श्रावण सुदि 1 रविवार ता. 21 जुलाई 1963 को निकाला गया था, जिसका लाभ संघ अध्यक्ष श्री मेहताबचंदजी गोलेच्छा की माताजी श्रीमती मदनकंवरबाईसा. ने लिया था।

प्रत्येक रविवार को अलग अलग विषयों पर पूज्यश्री के प्रवचन होते। हर रविवार को विशिष्ट व्यक्तित्व अतिथि के रूप में पधारते। संघ संचालक श्री सुन्दरसिंहजी भंडारी जो बाद में राज्यपाल बने, पंडित श्री चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ, महाराजा संस्कृत कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री चन्द्रशेखरजी द्विवेदी जो बाद में पुरी के शंकराचार्य बने, आदि विशिष्ट विद्वान् लोगों का आगमन हुआ था।

जयपुर से लगभग 12 कि.मी. की दूरी पर आमेर किला है। वहाँ चन्द्रप्रभ परमात्मा का भव्य मंदिर है, जिसका संचालन जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर करता है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा महोपाध्याय शिचन्द्र गणि के करकमलों से वि. सं. 1877 में संपन्न हुई थी। महोपाध्याय श्री शिवचन्द्र गणि खरतरगच्छ की क्षेमधाड शाखा के जिनचन्द्रसूरि के शिष्य दयासिंह के शिष्य महोपाध्याय रामविजय के शिष्य पुण्यशील गणि के शिष्य समयसुन्दर गणि के शिष्य थे। आमेर का यह मंदिर उन्हीं की प्रेरणा से निर्मित हुआ था। वहाँ हर वर्ष आसोज सुदि 3 को मेला होता है।

(शेष पृष्ठ 9 पर)

पत्र में लेख

प्रिय आत्मन्

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

प्रिय आत्मन्!

तेरा पत्र मिला है। पाकर प्रसन्नता का अनुभव किया है। तुम्हारे चित्त में जो जिज्ञासा का तत्त्व प्रकट हुआ है, वही जीवन की दिशा को परिवर्तित करने वाला है।

जैसा तुमने अपने पत्र में लिखा– कभी कभी मन बैचेन हो उठता है। परिस्थितियों की प्रतिकूलता में चित्त कषायग्रस्त हो उठता है। उस समय कुछ अच्छा नहीं लगता। अपने पराये जैसे लगने लगते हैं। मन अशांत हो उठता है। उस समय नहीं करने योग्य विचारों का प्रवाह लगातार चलता है। मेरी छोटी-सी गलती पर मुझे जो डांट मिलती है, वह मुझसे सहन नहीं होती।

पापा को डांटना है तो एकान्त में डांटे। सबके सामने डांटते हैं तो मैं बहुत अपमानित अनुभव करता हूँ। मम्मी भी उनकी हां में हां मिलाती है, तो मन बहुत एकाकीपन का अनुभव करता है।

प्रिय!

उस समय तूं मेरे पत्रों को पढ लिया कर! बार बार पढ! तुझे दिशा मिलेगी... सान्त्वना मिलेगी। तुम अपने मन को छोटा मत किया करो। पापा मम्मी की डांट के कारण उनके प्रति परायेपन का विचार लाना, उनके प्रति बहुत बडा अन्याय है। वे तुम्हारे भले के लिये कहते हैं। यह हरगिज मत सोचना कि तुमसे वे प्यार नहीं करते। वे तुम्हें योग्य बनाना चाहते हैं। तुम्हारी क्षमता को स्वर देना चाहते हैं।

गलती के लिये डांटने का अर्थ ही है कि वे तुमको सर्वथा गलती रहित बनाना चाहते हैं। ताकि तुम भविष्य में किसी भी प्रकार की गलती न करो। और जीवन में ऊँचाईयाँ और अच्छाईयाँ प्राप्त कर सको।

तुमने जिराफ देखा होगा। लम्बी गर्दन वाला! उसके संदर्भ वाली यह घटना तुम्हें मार्गदर्शन देगी।

एक नेशनल पार्क में बहुत से लोग घूमने गये थे। स्कूल के छात्र भी अपने अध्यापक के साथ घूम रहे थे। तभी एक दृश्य दिखाई दिया। गाइड ने सभी को शांत रहने को कहा।

वहाँ एक दुर्लभ दृश्य नजर आ रहा था। एक मादा जिराफ बच्चे को जन्म दे रही थी। बच्चा लगभग 10फीट की ऊँचाई से धडाम से नीचे गिरा। नीचे गिरते ही बच्चे ने अपने पांव भीतर की ओर मोड दिये। बच्चा अभी तक यही समझ रहा था कि वह मां की कोख में है।

मां ने सिर नीचे झुकाया... बच्चे को देखने लगी। सभी लोग बडी उत्सुकता से रोमांचित होते हुए यह दृश्य देख रहे थे।

तभी मां ने बच्चे को जोर से लात मारी। बच्चा पलट गया।

छात्र मास्टरजी से कहने लगे– इस जिराफ को रोकिये अन्यथा यह बच्चे को मार डालेगी।

अध्यापकजी अनुभवी थे। उन्होंने छात्रों को शांत रहने का कहा।

बच्चा अभी भी जमीन पर पडा हुआ था। तभी मां एक बार फिर जोर से लात मारी।

इस बार बच्चा उठ खडा हुआ। धीरे धीरे डगमगाता हुआ चलने लगा।

मां और बच्चा धीरे धीरे चलते हुए झाडियों में ओझल हो गये।

उनके जाते ही छात्रों ने अध्यापकजी से पूछा– सर! वह जिराफ अपने ही बच्चे को लातें क्यों मार रही थी! कहीं बच्चे के मर्मस्थान पर लग जाती और वह मर जाता तो...!

अध्यापकजी ने उत्तर दिया– बच्चों! जैसा तुम सोचते हो, वैसा नहीं है। वह लातें मारकर अपने बच्चे को दुख नहीं दे रही थी। बल्कि उसकी सुरक्षा का उपाय कर रही थी।

बच्चों ने पूछा– यह कुछ समझ में नहीं आया!

अध्यापकजी ने कहा– जंगल में शेर, चीते, भालु जैसे बहुत से खूंखार जानवर रहते हैं। यहाँ किसी बच्चे का जीवन इसी बात पर निर्भर करता है कि वो कितनी जल्दी अपने पांवों पर खडा होता है... कितना जल्दी चलना सीख लेता है!

(शेष पृष्ठ 9 पर)

गोत्र इतिहास
50

रीहड/रीड/रेड गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

इस गोत्र की स्थापना विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में दूसरे दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि ने की थी। रतनपुर नामक गाँव में दादा गुरुदेव का पदार्पण हुआ।

वहाँ उनके प्रभावशाली प्रवचनों को श्रवण करने के लिये पूरा गांव उमड पडा। माहेश्वरी जाति के राठी गोत्रीय श्री रीडमलजी सपरिवार गुरुदेव की सेवा में आने लगे। वे धर्म को समझना चाहते थे।

गुरुदेव से धर्म की सूक्ष्म और यथार्थ परिभाषा समझकर उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर लिया।

गुरुदेव ने उनको उनके नामानुसार रीहड गोत्र प्रदान करते हुए उनके सिर पर वासचूर्ण डाला। इस गोत्र को ओसवाल जाति में सम्मिलित किया।

चतुर्थ दादा गुरुदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म इसी गोत्र में खेतासर में हुआ था।

(शेष पृष्ठ 7 का)

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

नंदीश्वर तीर्थ की प्रतिकृति जो मूल्यवान् काष्ठ में निर्मित है, बहुत अद्‌भुत है। इसे देखते तो देखते ही रह जाओ।

उसके दर्शन कर ऐसा लगता है कि जैसे हम साक्षात् नंदीश्वर द्वीप का अवलोकन कर रहे हैं। उस जिन मंदिर के शिखर पर ध्वजदंड व स्वर्णकलश की प्रतिष्ठा होनी थी। संघ के निवेदन को स्वीकार कर पूज्यश्री ने यह प्रतिष्ठा संपन्न करवाई। सप्ताह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया था। आसोज सुदि 1 से आसोज सुदि 7 ता. 18.9.63 से 24.9.63 तक यह महोत्सव चला था।

प्रतिष्ठा आसोज सुदि 3 शनिवार ता. 21 सितम्बर 63 को संपन्न हुई थी। आमेर के इस मंदिर के प्रतिष्ठाकारक खरतरगच्छ के महोपाध्याय श्री शिवचन्द्र गणि द्वारा रचित नंदीश्वर द्वीप की पूजा पढाई गई थी। इस पूजा की रचना वि. 1876 ज्येष्ठ सुदि 1 को जयपुर में की थी। इस महोत्सव का संपूर्ण लाभ सेठ श्री हमीरमलजी मनोहरमलजी गोलेच्छा परिवार ने लिया था। सेठ श्री हमीरमलजी गोलेच्छा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त थे। पालीताना में श्री जिनहरिविहार का भूखण्ड खारीदने में पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से जयपुर के जिन दो श्रावकों ने अपना द्रव्य अर्पण किया था, उनमें एक श्री हमीरमलजी गोलेच्छा थे व दूसरे श्री सिरहमलजी संचेती थे।

(शेष पृष्ठ 8 का)

प्रिय आत्मन्

यदि वह मादा जिराफ अपने बच्चे को लात नहीं मारती तो वह शायद अभी भी वहीं ऐसे ही पडा रहता और वह जंगली किसी खूंखार जानवर का शिकार हो जाता।

यह उदाहरण तुम पर लागू होता है। जब माता पिता कई बार डांटते हैं तो उस समय बहुत बुरा लगता है। पर बाद में जब पीछे मुडकर देखते हैं तो अहसास होता है कि उनकी डांट के कारण ही आज मैं कुछ बन पाया हूँ।

तुम यह मत सोचना कि वे डांट रहे हैं!

यह सोचना कि डांटने के पीछे उनके भाव क्या है? उनकी मंशा क्या है?

माता पिता गलती कर सकते हैं, पर गलत नहीं हो सकते। इस बात को सदा याद रखना। तुम्हें बहुत सुकून मिलेगा। अपने ऐसे जागरूक माता पिता के लिये मन में गौरव का अनुभव होगा।

विशेष फिर!

जिनमणिप्रभसूरि

139

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

बैंगलोर की दोनों प्रतिष्ठाओं की संपन्नता के पश्चात् हमारा विहार हुआ। विहार का लक्ष्य तिरपातूर था। जहाँ मार्च महिने की 12 तारीख को मुमुक्षु सुश्री संगीता कवाड की भागवती दीक्षा थी।

बनरगट्टा में 18 फरवरी को प्रतिष्ठा थी। 19 को द्वारोद्घाटन और 20 फरवरी को विहार! समय बहुत तेजी से जा रहा था। हमने होसुर, कृष्णगिरि होते हुए तिरपातूर की ओर विहार किया। इस बीच आगे के कार्यक्रम तय हो चुके थे। आगामी चातुर्मास चेन्नई में घोषित कर दिया था। चेन्नई वडपलनी की प्रतिष्ठा 22 मई को निर्धारित की थी। इस कारण तिरपातूर से सीधे चेन्नई की ओर विहार करना था। चेन्नई की प्रतिष्ठा करवाकर पुनः कृष्णगिरि आना था, जहाँ 20 जून को प्रतिष्ठा निश्चित की थी। प्रतिष्ठा के बाद पुनः चेन्नई की ओर विहार था।

विहार थोडा लम्बा हो रहा था। एक ही रूट पर बार बार हो रहा था। इस कारण वडपलनी ट्रस्ट मंडल से चर्चा की। उन्हें समझाया कि वडपलनी की प्रतिष्ठा चातुर्मास पश्चात् हो तो ज्यादा उचित होगा। अन्य कई संघों को लाभ मिलेगा। वडपलनी के आगेवान श्रावक श्री वीरेन्द्रमलजी मेहता एवं श्री पदमजी टाटिया से वार्तालाप किया। उन्होंने स्वीकार कर लिया। परिणामतः हमारा काफी विहार बच गया।

तिरपातूर की ओर विहार किया ही था कि दूसरे दिन मुझे बुखार आ गया। दवाई लेने पर भी बुखार उतरा नहीं। तो डॉक्टर की सलाह पर ब्लड टेस्ट किया गया। टेस्टिंग में टाइफाइड आया। विहार भी जरूरी था। रुक नहीं सकते थे। क्योंकि तिरपातूर का मुहूर्त्त निकल चुका था। और तिरपातूर लगभग 140 किलोमीटर था। इस बीच होसुर, कृष्णगिरि आदि क्षेत्रों की स्पर्शना थी। जहाँ थोडा समय लग सकता था।

विहार में ही इलाज हुआ। लगातार ग्लुकॉज़ आदि का उपचार चल रहा था। पैदल विहार संभव नहीं हो पाने के कारण व्हील चेयर का उपयोग करना पडा। पता नहीं दवाई में नींद की दवा मिश्र थी या और क्या था, पर प्रायः दिन भर मुझे नींद आती। गोचरी करने के लिये उठो। गोचरी करके फिर सो जाओ। पडिलेहण आदि क्रिया के लिये उठो, करके सो जाओ। शाम प्रतिक्रमण करो और फिर सो जाओ। विहार में भी नींद!

कृष्णगिरि पहुँचे तब तक तबियत थोडी ठीक हो चुकी थी। कृष्णगिरि तीर्थ के उपदेष्टा श्री वसंतगुरुजी जो उस समय साधक की अवस्था में थे, मिले। उनकी वेषभूषा बिल्कुल सनातन संत जैसी थी। भगवे वस्त्र थे, हाथ में सिंह मुखी मोटा और आदमकद दंड था। अधिकतर वे जाप साधना में रहते। मौन रहता। तपस्या करते। मूलतः वे छाजेड गोत्र के हैं। स्थानकवासी परिवार में जन्म हुआ है। पर मंदिर के प्रति समर्पित है। विवाह होने के कुछ समय बाद उन्होंने संन्यास ले लिया था। पत्नी है, पुत्र है, पर वे त्यागी हैं। इस पूरे क्षेत्र में वे चमत्कारी संत के रूप में प्रसिद्ध है।

किसी के हाथ से कंकु निकलता है तो किसी के हाथ से सिक्के निकलते हैं। उनसे मुलाकात हुई। हाँलाकि यह मुलाकात तीसरी थी। सबसे पहले वे हमें मालपुरा में मिले थे। ध्यान साधना के संबंध में चर्चा हुई थी। दूसरी बार बैंगलोर में मिले और आज तीसरी बार मिलना हुआ था। एक मंदिर यहाँ बना हुआ था। दूसरा विशाल मंदिर बन रहा था। उसमें सहसफणा पार्श्वनाथ परमात्मा की अंजनशलाका प्रतिष्ठा थी। साथ ही मंदिर परिसर में 24 अलग अलग मुद्राओं वाली पद्मावती देवी की प्रतिमाओं की भी प्रतिष्ठा थी। वे माता

पद्मावती देवी के अनन्य उपासक हैं। मंदिर बहुत ही विशाल बना था। कांच का काम किया गया था।

मंदिर और प्रतिष्ठा के संबंध में विस्तार से चर्चा हुई थी। आयोजन की पूरी भूमिका निर्णीत हुई। बहिन म. को वे अपनी बहिन की तरह मानते हैं। साध्वी रत्ना वयोवृद्धा श्री प्रकाशश्रीजी म.सा. पूजनीया माताजी म. बहिन म. आदि साध्वी मंडल शेषकाल में काफी समय कृष्णगिरि में रुके थे। उस समय श्री वसंत गुरुजी का जो सहयोग और अपनत्व मिला था, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आज भी उनके व्यवहार में वही अपनत्व मिलता है।

दो चार दिन रुककर हमने तिरपातूर की ओर विहार किया। वहाँ दीक्षा समारोह का प्रारंभ 8 मार्च से हो गया था। जबकि हमारा प्रवेश 9 मार्च को हुआ था। साध्वी रत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा तिरपातूर पधार गये थे। जबकि बहिन म. आदि ठाणा हमारे साथ ही थे। वयोवृद्धा श्री प्रकाशश्रीजी म. पूजनीया माताजी म. आदि ठाणा कृष्णगिरि रुके थे।

कुमारी संगीता की संयम के प्रति दृढता अनुमोदनीय तो थी ही, अचरजकारी भी थी। मुझे याद है जब हमारा चातुर्मास उज्जैन नगर में था। तब साध्वी सुलोचनाश्रीजी म. का चातुर्मास इन्दौर था। उस वर्ष गिर जाने से संगीता को कमर में बहुत तीव्र चोट लगी थी। फ्रेक्चर भी था। उस समय की स्थिति देख कर नहीं लगता था कि वह संयम ग्रहण कर पायेगी।

लेकिन उसकी इच्छाशक्ति और आत्मबल का कमाल! दादा गुरुदेव और पूज्य गुरुदेव की कृपा का परिणाम कि वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई।

ता. 11 मार्च को वरघोडा था और ता. 12 मार्च को दीक्षा! दीक्षा के वातावरण को देखने तमिलभाषी काफी लोग उपस्थित थे। वे समझ नहीं पा रहे थे कि यह बहिन सब कुछ त्याग कैसे कर पा रही है! जिसमें उन्होंने सुख समझा था, उसे कैसे छोड रही है! और जिसमें उन्होंने दुख माना था, उसे यह कैसे स्वीकार कर रही है!

टाइफाइड अभी भी पीछा नहीं छोड रहा था। कामकाज के कारण निद्रा की मात्रा में गिरावट जरूर आ गई थी। पर कमजोरी का अनुभव था।

दीक्षा समारोह के पश्चात् कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् हमारा विहार कृष्णगिरि की ओर हुआ। होली चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् सेलम की ओर विहार किया। बहिन म. आदि ठाणा का आगे सेलम इरोड की ओर विहार हो चुका था।

ता. 2 अप्रेल को सेलम में प्रवेश किया। यहाँ खजवाना का डोसी परिवार रहता है। गोल उम्मेदाबाद के काफी घर है। कच्छी परिवार भी हैं। मोकलसर के घर भी हैं। मंदिर दर्शन किये। मंदिरजी में दादा गुरुदेव के चरण युगल भी हैं। लेकिन उन्हें बिराजमान नहीं किया गया है। जीर्णोद्धार के समय उत्थापन तो कर लिया पर बाद में सांप्रदायिक अभिनिवेश का यह परिणाम रहा कि चरण ऐसे ही एक आले में रख दिये गये। न तो उन्हें बिराजमान किया है और न ही उनकी पूजा होती है। इस आशातना को देखकर मन रुदन कर उठा।

संघ को बहुत कहा। पर लोग टस से मस नहीं हुए। आज भी वे चरण ऐसे ही रखे हैं। हमारे प्रवेश पर सामैया किया। सारे रीतिरिवाज किये। प्रवचन हुए। दो तीन दिन रुकना भी हुआ।

पर पता नहीं, कब वह शुभ मुहूर्त्त आयेगा, जब पहले से वहीं पर प्रतिष्ठित गुरुदेव के वे चरण पुनः बिराजमान होंगे।

क्रमशः

शब्द हमारे भावों को अभिव्यक्त करने का जरिया है तो ऐसे शब्द ही मुख से निकलें
जिससे हमारे शुभ शुद्ध भाव प्रतिबिंबित हो और
उन भावों से मेरे प्रति नहीं बल्कि एक साधुवेषधारी के प्रति श्रद्धा बढ़ाने वाला बने।

कहानी
7

श्री हरिबल केवली

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

(गतांग से आगे)

उसके इस दुर्भाव को जानकर मेरी माता, भाई और स्वजनों ने उसे इस कुकृत्य से रोका। तब उसने सबको बाहर भेजा और वह पापात्मा मुझे लेकर यहाँ आया। विद्या के बल से उसने इस महल का निर्माण कर लिया। जब भी वह किसी प्रयोजन से बाहर जाता है, तो विद्या के बल से मुझे मृतावस्था में छोड़ जाता है और मुझे वापस आकर अमृत से जीवित करता है। हे सज्जन! मैं इस जीवन से थक चुकी हूँ। आप मुझसे विवाह करके इस दु:ख सागर से निकालो। जब हरिबल सोचता है-अहो! जीवदया रूप कल्पलता का फल इतना महान यह सुंदरी मुझ जैसे निम्न कुल वाले जन्मे से शादी की इच्छा करती है। उसने तुरन्त उससे शादी कर ली।

कुसुमश्री ने हरिबल को कहा जो मेरे पिता यहाँ आयेगा तो कुछ भी अनर्थ कर देगें। अत: हम यहाँ से अन्यत्र चलें। तब हरिबल बोला-हे प्रिये! मैं बहुत कष्ट सहकर जिस कार्य के लिये यहाँ आया हूँ, वह कार्य करने के बाद ही जाना श्रेष्ठ समझता हूँ। आपके कुसुमश्री ने कहा-हे स्वामी! तुम्हारे राजा के प्रत्युतर रूप मैं ही कुछ चिन्ह लाऊंगी, कहकर वह कन्या किसी उपाय से विभीषण के भवन में जाकर उसका चन्द्रहास खड्ग लाकर हरिबल को सौंप दिया। पत्नि सहित प्रसन्न होता हुआ हरिबल वहाँ धन लेकर समुद्र तट पर पहुँच गया।

स्मरण करने पर मत्स्य रूप वह देव वहाँ आया। उसने धन सहित उन दोनों को अपनी पीठ पर बिठाकर नगरी के समीप उसको छोड़ दिया। वहाँ दिनभर हरिबल अपनी पत्नि सहित उस वन खण्ड में रहा। रात्रि को कुसुमश्री को कहकर अपने घर आकर गुप्त रूप से अपना घर देखता है।

उस दिन कामाग्नि से पीड़ित मदनवेग राजा भी अकेला ही दुष्ट बुद्धि से वसंतश्री के पास आया। महासती वसंतश्री ने उसके दुष्ट अभिप्राय को जानकर बाहरी रूप से प्रसन्नता अभिव्यक्त करते हुए उन्हें आसन दिया। हर्षित होता हुआ राजा बोला-हे शशिवदने! तुम्हारा रूप रति के तुल्य है और मैं कामदेव के समान हूँ। अत: हमारा मिलन बहुत महत्त्वपूर्ण और सफल होगा। इतना सुनने पर वसंतश्री दु:खी होती हुई सोचने लगी-कि मैं। अकेली शरण रहिता क्या करूं? कैसे अपने शील की रक्षा करूं? शील बिना जीवन व्यर्थ है। राजा भले प्राणों का हरण करें या प्रसन्न होकर बहुत संपत्ति दें, पर मैं अपने शील को भंग नहीं होने दूंगी। उसने प्रसन्न होने का अभिनय करते हुए कहा कि हे स्वामी! आपने बहुत कृपा की जो हमारे घर पधारे परन्तु आपकी प्रार्थना उचित नहीं है। उत्तम कुल में जन्म लेने वाली नारी पति के जीवित होते परपुरुष से वार्तालाप भी नहीं करती तो शील खण्डन की क्या बात?

राजा हंसते हुए बोला-हे भद्रे! तुम्हारे पति को मारने के लिये ही मेरे द्वारा विषम संकट में भेजा गया है। यदि वह जीवित आ भी जायेगा, तो मैं किसी उपाय से उसको मार दूंगा। अत: सारी चिन्ताएं छोड़ मुझे स्वीकार कर। तब वसंतश्री सोचती है-धिक्कार है कामातुरों को। अब कैसे भी करके समय पसार करना श्रेष्ठ है और उसने साहस का आलम्बन लेकर कहा-स्वामी। इतनी शीघ्रता क्यों करते हो, कार्य तो अब आपके ही हाथ में है। जब तक मेरे पति की खोज नहीं हो जाती, तब तक उतावलेपन का त्याग करो। राजा ने सोचा अब यह मेरे वश है। यदि इसका पति आयेगा तो मैं किसी भी उपाय से उसे मार दूंगा। ऐसा सोचता हुआ प्रसन्नचित्त बनकर राजा अपने महल में लौट आया।

अब वसंतश्री अपनी सखी को कहने लगी-हे भद्रे! यदि पति नहीं आये तो मैं शील की रक्षा कैसे करूंगी? और यदि भर्त्ता सकुशल आ भी गये तो यह राजा उनका अमंगल करेगा, अब तो मरण ही मेरी शरण है।

हरिबल यह सारा संवाद सुनकर सोचता है मेरी धर्मपत्नी ने अपने चातुर्य अपने शील की रक्षा की है। हरिबल तुरंत वसंतश्री के सम्मुख आया, वसंतश्री अत्यन्त हर्षित होती हुई। हरिबल ने अपना सारा वृतांत कह सुनाया। वसंतश्री बोली-आपने मेरी भगिनी को वनखण्ड में क्यों छोड़ा। उससे मिलने के लिये मैं अतीव उत्सुक हूँ। इतना कहकर वह कुसुमश्री को लेने के लिये हरिबल के साथ चली। कुसुमश्री ने वसंतश्री को आते देखकर सामने आई और उसके चरणों का स्पर्श किया। और दोनों भगिनियां रथ में साथ बैठकर घर आई।

हरिबल ने एक सेवक को राजा के यहाँ संदेश भेजकर उसने कहा कि आपके द्वारा भेजा गया हरिबल लंका जाकर विभीषण की पुत्री से शादी करके उसके साथ उपवन में आ गया है। यह सुनकर राजा सोचता है धिक्कार हो अरे! मेरे मनोरथ निष्फल हुए। मेरे दुर्भाग्य से वह लंका जाकर विभीषण की पुत्री से शादी करके आ गया। बाहरी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करता हुआ खिन्न मन से उसने हरिबल का महोत्सव पूर्वक नगर प्रवेश करवाया।

हरिबल के प्रणाम आदि सत्कार करने के बाद राजा ने हरिबल से पूछा-तुम लंका कैसे गये और वापस कैसे आये? हरिबल बोला, आपके आदेश से मैं निकला और कुछ दिनों में समुद्र तट पर पहुँच गया। दुष्कर समुद्र को देखकर मैं उद्विग्न बना, तभी एक राक्षस वहाँ आया मैंने उसे देखकर नमस्कार किया और उससे लंकागमन का उपाय पूछा। तो उसने कहा यहाँ बैठकर काष्ठ भक्षण करोगे तो इस प्रकार लंका पहुँच जाओगे। मैंने उसके कहे अनुसार काष्ठ भक्षण और उसने मेरी रक्षा करते हुए मुझे विभीषण के सामने ले गया। तब मेरे सत्त्व से प्रसन्न होकर मुझे जीवित देखकर विभीषण ने तुरन्त ही अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कर दिया। मुझे दिव्य वस्त्र-आभूषण आदि देते हुए कहा अपने स्वामी से कहना कि अपनी पुत्री के लिये जो निमंत्रण दिया उसकी प्रशंसा करते हुए। मुझे कहा हे पुरुष! तुम जाओ मैं अवश्य ही विवाह पर आऊंगा। आपको प्रमाण प्रेषित करते हुए अपना चन्द्रहास खड्ग मेरे हाथों में सौंपा है। फिर अपनी विद्या के बल से मुझे यहाँ लाकर छोड़ा। इस प्रकार कहकर उसने चन्द्रहास खड्ग राजा को सौंप दिया। राजा ने खड्ग लिया और सारे वृतान्त को सत्य मान लिया। हरिबल को अपना परम मित्र घोषित किया।

राजा ने उसके लोकोत्तर चरित्र को जाना तो उसकी कामाग्नि स्वयमेव मंद हो गई।

एक बार पत्नियों के द्वारा मना करने पर भी हरिबल ने अपने परममित्र राजा को घर पर भोजन के लिये निर्मंत्रित किया। राजा भोजन के लिए हरिबल के घर पर आया। वसंतश्री व कुसुमश्री ने नये-नये परिधान पहनकर राजा का सत्कार किया। उन दोनों के सौन्दर्य को देखकर राजा की सुषुप्त कामाग्नि पुनः जाग उठी। वह सोचता है ऐसी रूपवान स्त्रियाँ इसे कहाँ से प्राप्त की? इस प्रकार की तो मेरे महल में भी नहीं है।

भोजन के उपरान्त अपने आवास पर आया और उसने दुष्ट मंत्री को बुलाया- कहा हे मंत्री! हरिबल के घर कितनी स्त्रियाँ है? मंत्री ने कहा-दो स्त्रियाँ है परन्तु उन दोनों ने नये-नये परिधान पहनकर आपको विस्मित किया है। राजा ने कहा हे मंत्री-अपनी बुद्धि से हरिबल को मारने का उपाय करो। यह सुनकर उस दुरात्मा मंत्री ने कहा कि स्वामी। अग्नि प्रवेश के बाद कोई जीवित नहीं बचता है। उसे यम को निर्मंत्रित करने के बहाने भेजो। राजा ने मंत्री की प्रशंसा करते हुए कहा तुम्हारी बुद्धि बहुत श्रेष्ठ है।

एक दिन राजा ने हरिबल को आमंत्रित किया और कहा-हे सत्पुरुष! असाध्य कार्य करने की शक्ति तुम में है इसलिये अग्नि प्रवेश करके सपरिवार यम को मेरे लिये निमंत्रण दो और मित्र यह कार्य करने में तुम ही समर्थ हो। यह सुनकर वह सोचता है, अवश्य ही यह इसके मित्र दुष्ट मंत्री का प्रपंच है। पूर्व में भी इसी ने ही मुझे समुद्र में फेंकवाया था। इतना विचार कर दक्षिण्यता गुण के कारण हरिबल ने सब कुछ अंगीकृत किया। घर आकर अपनी पत्नियों को सारा वृतान्त बताया। पत्नियों ने कहा कि हमने आपको पहले ही रोका था पर आप नहीं माने और आपने सब कुछ स्वीकृत कर लिया। हरिबल ने कहा तुम तनिक भी चिन्ता मत करो, सब अच्छा होगा।

प्रेरणा
2

बलिदान

– उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म.

खरतरगच्छ के उज्ज्वल नक्षत्र अकबर प्रतिबोधक दादा श्री जिनचन्द्रसूरि के गुरु महाराज थे- आचार्य श्री जिनमाणिक्यसूरि।

शास्त्रों का मंथन और चिन्तन करते हुए आचार्य जिनमाणिक्यसूरि के हृदय में सद्भावना के बीज पल्लवित हुए- हमारा सुविधाप्रधान जीवन आगम वाणी के विरूद्ध है। आचार का शैथिल्य आत्मा के लिये कभी भी हितावह नहीं हो सकता।

शिथिलता का परित्याग करके आचार्यश्री क्रियोद्धार के लिये जन-मन-मंगलकारी दादा श्री जिनकुशलसूरि की पुण्यभूमि देराउर के दर्शनार्थ पधारे।

श्रद्धा से चरण-वंदना करने की भावना साकार हुई। तदुपरांत वापस बीकानेर लौट रहे थे।

आषाढ़ माह का तप्त आकाश! मरूधरा के तपते टीले। उष्ण लू के करारे थपेडे। ऐसी भीषण गर्मी में भी समता-साधक सूरिपुंगव के उपवास का निर्मल तप था क्योंकि आज शुक्ला पंचमी का पावन पर्व दिवस था।

निमित्त आदि दोषों से मुक्त अचित्त जल को ही लेने का दृढ अभिग्रह और आत्मिक आग्रह था।

शुद्ध जल प्राप्त न हो पाया तो रात्रिकाल में भयंकर पिपासा परीषह उत्पन्न हुआ। यद्यपि आषाढ शुक्ला पंचमी की निशा निराशा में बदल रही थी पर आचार्य श्री जिनमाणिक्यसूरि आराधना के प्रति पूर्ण आशान्वित थे ।

भक्तजनों ने रात्रि में जलपान का निवेदन करते हुए कहा-गुरुदेव! आपके शरीर के संकेत-लक्षण ठीक प्रतीत नहीं हो रहे हैं। कहीं कोई अप्रत्याशित अप्रिय घटना न घट जाये, अतः आप अचित्त जल स्वीकार कर लीजिये।

सूरिवर ने कहा-अरे! जब मैंने अतीत में भी कभी रात्रि भोजन का दोष नहीं लगाया तो अब इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता को स्थान कैसे मिल सकता है?

मेरी यह सात्त्विक भावना है कि दोष लगाकर लम्बा जीवन जीने की बजाय निर्दोष छोटा जीवन बेहतर है। मुझे अगर व्रत-पालन की वेदी पर प्राणों का बलिदान करना पडेगा तो भी मुझे कोई भय या घबराहट नहीं है। कहते हुए आचार्यश्री का तेजोमय ललाट संकल्प की आभा से अधिक दैदीप्यमान हो उठा।

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर यह अध्याय आज भी चमक रहा है कि पिपासा उपसर्ग आने पर भी आचार्य श्री जिनमाणिक्यसूरि की धीरता-गंभीरता सागर को भी शर्मिन्दा कर गयी और वे शुभ आत्म-भावों में विचरण करते हुए उसी रात्रि में विक्रम संवत् 1612, आषाढ शुक्ला पंचमी को स्वर्गवासी हो गये।

इस गरिमामयी घटना से शत-प्रतिशत पता चलता है कि जैन साधु रात्रि भोजन त्याग नामक व्रत के प्रति अतीव आस्थावान् हैं। आज भी वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ के गर्म महिनों में प्यास के कारण रात-रात भर जागरण कर लेते हैं पर सूर्यास्त से नवकारसी पर्यन्त जल की एक भी बून्द स्वीकार नहीं करते।

ज्ञान कभी अहं का जन्म नहीं देता और यदि अहं आ जाये तो उसे ज्ञान नहीं अज्ञान समझना है।
मैं ज्ञान हासिल करने आया हूँ। यही मेर लक्ष्य है।

इतिहास के पन्नों से

खरतरगच्छ की जन्म स्थली पाटण की महाप्रभावशाली दादावाडी

—मुनि विरक्तप्रभसागरजी म.

भारत भर की सैंकड़ों दादावाडियों में से एक पाटण की दादावाडी जिस धरती पर संवत् 1075 श्री जिनेश्वरसूरि को खरतर बिरुद प्राप्त हुआ था। उसी पावन भूमि पर तीसरे दादागुरुदेव की आचार्य पदवी, चातुर्मास एवं आपके करकमलों से कई प्रतिमाओं की अंजनशलाका व प्रतिष्ठाएं सम्पन्न हुई हैं।

ऐसी यह ऊर्जावंत भूमि जिसने कुशल गुरुदेव की चरणरज से स्वयं को पावन किया है। ऐसी इस पाटण नगरी में सवा चार सौ वर्ष से भी प्राचीन एवं महाचमत्कारी श्री जिनकुशलसूरि दादाबाड़ी है। जिसके पवित्र वातावरण की स्पर्शना से मुरझाई हुई जीवन की कलियां भी पल्लवित हो जाती है, तो सोयी हुई भाग्य की रेखा भी जागृत हो जाती है।

जैसे मालपुरा की फिजाओं में कुशल गुरु का वास है, तो ठीक वैसे ही पाटण के इस दादा ना पगला के नाम से विख्यात दादाबाड़ी में भी आपका पावन अहसास है...

वर्षों पूर्व बाबू पन्नालाल परिवार द्वारा एक विशाल भूखण्ड के मध्य एक छोटी सी छतरी का निर्माण कर कुशल गुरुदेव के पगलों को बिराजमान किया गया। शुद्ध, निर्मल भावों से नित्य पूजा भक्ति से उस भूमि का अतिशय निरन्तर बढ़ने लगा....

अचानक एक दिन भूकम्प ने उस छतरी को एक ही पल में ध्वस्त कर दिया। पर वहीं पर एक अनूठे चमत्कार का सर्जन हुआ। कि दादागुरु के पगलों को तनिक भी आँच नहीं आई। उस छतरी का जीर्णोद्धार करके एक छोटी दादाबाड़ी का रूप दिया गया।

दादाबाड़ी के आस-पास के भूखण्ड पर लगभग १८४ बंगलों की सोसायटी का निर्माण हुआ। पूरी सोसायटी में एक, दो घर के अलावा तमाम घर जैनेतरों के हैं। परन्तु सभी की इस दादाबाड़ी के प्रति अटूट आस्था है। कई बार यहाँ के जैनेतर लोगों ने दादाबाड़ी में एक श्वेत वस्त्रधारी को दर्शन किये है तो किसी ने स्वप्न में दादागुरुदेव के दर्शन प्राप्त किये हैं। यहाँ के कितने ही रहवासियों का नित्यक्रम है कि सोसायटी से निकलने से पूर्व दादा का स्मरण करके जाने से उनके हर कार्य सफल हुए हैं।

कुशल गुरुदेव यहाँ इतने हाजराहजूर हैं कि एक पटेल युवक की नौकरी दूसरे गाँव में थी। रोजाना आना-जाना करता था। कभी घर से निकलने में देरी हो जाती और रास्ता भटक जाता तो कुशल गुरुदेव के मंत्र का जाप प्रारंभ करता। जैसे ही तीसरी बार मंत्र बोलता कि उससे पहले ही उसे उसके गन्तव्य स्थल तक छोड़ने वाला सामने से मिल जाता था।

यहाँ किसी के घर पर यदि पालना बंधता तो वह सर्वप्रथम दादा के चरणों में एक पालना चढ़ाकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त करता है।

ऐसी एक नहीं कई घटनाएं यहाँ की दादाबाड़ी से जुड़ी हुई हैं। उनके चरणों में रखी गई हर भावना निश्चित रूप से साकार हो जाती है...सूर्य से उसकी किरणें अलग हो सकती हैं... चन्द्र से उसकी चाँदनी जुदा हो सकती है... पर पाटण के कुशल गुरु के दरबार में रखी गयी भावना कभी विफल नहीं हो सकती... ऐसे महाचमत्कारी दादाबाड़ी की भव्यता एवं दिव्यता के दर्शन करके जीवन की सफलता प्राप्त करें।

मिगसर वदि 3 ता. 30-11-2023 को

दादागुरुश्री जिनकुशलसूरि के 743 वें जन्मोत्सव पर

– हेमलता जैन, तेनाली

पाटण की शान: कुशल गुरु

राजस्थान में गढ़ सिवाना, जन्मा इक बालक प्यारा,
जयंतश्री, माता का दुलारा, जैसल जी का कुल उजियारा।।1।।

माघ कृष्ण तीज संवत 1337, नभ से उतरा जैसे कोई देवीक,
छाजेड़ गोत्र के थे वो प्यारे, करमण नाम से उन्हें बुलाए।।2।।

दिव्य वाणी गुरुवर की सुनी, चेतना मन में नयी जगी,
संयम राह चलना है मुझे, लगनी बस एक ये ही लगी।।3।।

सर पर हाथ गुरु का पाया, जिनचंद्रसूरीजी की थी छाया,
10 वर्ष की छोटी उम्र में, राजोहरण हाथ में आया।।4।।

फाल्गुन शुक्ल आठम (1346),तेरह सौ छयालीस,
करमण से बने वो कुशल मुनि, छोड़ सब जग रीत।।5।।

जयेष्ठ कृष्णा ग्यारस (11), तेरह सौ तीयोतर (1377),
दिन था वो बड़ा पावन कारी, पाटन नगरी थी गुरु की उपकारी,
मंगलकारी मूरत में मुनि ने, आचार्य की पदवी पाई प्यारी।।6।।

सबके मन में बसे उनके चित्र, कोमल हृदय और भाव से पवित्र,
दिन एक बड़ा ही दुखदाई आया,गुरुवर को इस संसार में ना पाया।।

फाल्गुन कृष्ण अमावस 1379,पूज्य गुरुवर हो गए स्वर्ग समाधि,
देराऊर पाकिस्तान की थी वो भूमि, गुरुदेव ने जहां स्वर्ग राह चुनी,
मन था सबका भरा, और आंखे थी सबकी सुनी।।8।।

कुशलधम, पाटण !

सुनो सुनाऊ एक कहानी। कुशल गुरु की कथा सुहानी।।
गाथा है सदियों की पुरानी। पाटन नगरी की कहानी।।1।।

पाटन नगरी में है दादावाड़ी। गुरु का परचा बडा है भारी।।
पगलिये है वो बड़े चमत्कारी। कुशल गुरु की महिमा न्यारी।।2।।

गुरु धाम है पावन कारी। नाम गुरु का रटे नर-नारी।।
श्रद्धा के जो फूल चढ़ाते। मन की इच्छा सब वो पाते।।3।।

गुरु के शरणों जो भी आए। खाली झोली भर ले जाए।।
घर में बंधे पालणिये। भक्ति करे गुरु आंगणिये।।4।।

बैठे जो बनके निराश। पूरी होती सबकी आस।।
कुशल गुरु है हाजरा हजूर। भक्तों को है यह विश्वास।।5।।

भीगे नयन हो, हो सच्ची लगन। पा जाते वो गुरु के दर्शन।।
खुशी के फूल खिले हर मन। चित्त हो जते सब के प्रसन्न।।6।।

मेरे दादा बड़े है उपकारी। गुण गाए हैं दुनिया सारी।।
हेमा की यह अर्ज है प्यारी। गुरु नाम पर जाऊं मैं बलिहरी।।7।।

धारावाहिक कथा 23

अधूरा सपना

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

(गतांक से आगे)

युवरानी कमला एवं सुंदरी ने प्रसन्नता से वंकचूल की बात को स्वीकारते हुए कहा- हम दोनों आपके समक्ष प्रतिज्ञा करते हैं कि किसी भी व्यक्ति के समक्ष चौर्य कर्म की चर्चा नहीं करेंगे। हाँ...कभी-कभी आपके समक्ष हम अपनी मानसिक भावना को प्रकट करते रहेंगे।

वंकचूल ने कहा- मेरे समक्ष तुम्हें प्रत्येक बात प्रकट करने का पूर्ण अधिकार है। मैं तुम्हारी भाषा और भावना पर बंदिश नहीं लगाता। तुम्हें वार्तालाप की अनुमति है। यह अनुमति शब्द भी गलत है। कहना चाहिये कि यह तुम्हारा पूर्ण अधिकार है। तुम्हारे कारण ही मेरे जीवन में सरसता और मीठास है। मेरे हृदय की मीठी संवेदना हो।

सुंदरी ने हंसते हुए कहा- लगता है भैया! आप एक कवि बन गये हो। जिम्मेदारी से आप गम्भीर ही नहीं बल्कि कोमल और संवेदनशील भी हो गये हैं। कितना अच्छा होता कि माँ और पिताजी के साथ भी आपका ऐसा ही अपनत्व-भरा व्यवहार होता यह कहते-कहते सुंदरी की आवाज भर्रा गई।

कुछ पलों के लिए वातावरण गमगीन हो गया। कमला और वंकचूल की आँखों में भी माता-पिता की स्मृति उभर आयी। उनका समय कैसे व्यतीत हो रहा होगा? राजमहल का सूनापन उनके जीवन को कितना कचोट रहा होगा?

कमला रानी ने ही माहौल बदलने के लिए सभी को पानी पिलाया। वंकचूल ने कहा- हम बहुत जल्दी माँ और पिताजी के दर्शन करेंगे।

वंकचूल अपने साथ सागर को लेकर आभूषणों को स्वर्ण मुद्राओं में बदलने के लिए उज्जैन पहुँच गया।

अपना कार्य पूर्ण कर वंकचूल और सागर अत्यन्त प्रसन्नता से पन्द्रह दिनों के पश्चात् पुनः पल्ली में आ गये। उन्होंने उज्जैन में रूककर एक लाख के आभूषण 55 हजार स्वर्णमुद्राओं में बेच दिये। आखिर चोरी का माल था। जितना मिला उतना अपना है, का सूत्र पकड़कर कम मूल्य प्राप्त होने पर भी प्रसन्नता के साथ 55 हजार स्वर्णमुद्राओं को लेकर लौट आये।

पल्लीवासियों ने तो सपने में भी 55 हजार की संख्या सुनी नहीं थी। इतनी बड़ी राशि प्राप्त कर सारी जनता अपने नये सरदार के प्रति भक्तिभाव से भर गई।

वंकचूल ने चोरी की इस राशि से सभी पल्लीवासियों के नये मकान बनाने की घोषणा की। कच्चे मकानों से त्रस्त जनता सरदार की इस उदारता के समक्ष जैसे न्योछावर हो गयी। चारों ओर सरदार की जय-जयकार होने लगी।

सैंकड़ों कारीगरों ने मकानों के निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया। सरदार की इच्छा थी कि वर्षाऋतु आने से पूर्व सभी को नये और पक्के मकान रहने के लिए प्राप्त हो जाए। कारीगरों को सूचना दी गई कि वर्षाऋतु के प्रारम्भ होने से पूर्व ही मकान बनकर तैयार हो जाने चाहिए।

चूंकि सामान खरीदने हेतु आर्थिक अभाव न था और न मजदूरी चुकाने में कटौती हो रही थी अतः निर्माण कार्य में मजदूर व कारीगर सभी लगातार जी जान से जुटे हुए थे।

पल्ली में नदी किनारे परमात्मा का मंदिर था। सुन्दरी ने विचार किया- जब गाँव वालों के लिए मजबूत आवास बनाये जा रहे हैं तो परमात्मा के मंदिर का जीर्णोद्धार भी होना ही चाहिए।

उसने अपने मनोगत भाव बंधुश्री वंकचूल के समक्ष प्रकट किये। मंदिर की स्थिति में आवश्यकतानुसार परिवर्तन हेतु आदेश दे दिया गया।

जब पल्लीवासी लोगों ने देखा कि हम सभी के लिए मजबूत मकान बनाये जा रहे हैं पर सरदार का स्वयं का मकान तो पुरानी स्थिति में ही है तो उन्होंने आकर सरदार से निवेदन किया- आपने अपना मकान क्यों नहीं बनाया।

सुनकर सरदार हल्का-सा मुस्कराया। उसने कहा- तुमने मुझे जब अपना सरदार बनाया है तो मेरी नैतिकता है कि मैं प्रजा की सुविधा के बारे में पहले सोचूँ। इस वर्ष तुम्हारे मकान बने हैं। आगामी वर्ष में प्रकृति को मंजूर हुआ तो मेरा भी बन जाएगा।

पल्ली वालों को लगा- हमें सरदार के रूप में साक्षात्

देवदूत प्राप्त हो गये हैं। ऐसा सरदार तो भाग्यवानों को ही मिलता है। जो अपनी अपेक्षा प्रजा का कल्याण और उनकी ही उन्नति हेतु तत्पर रहता है।

मंदिर व मकानों के कार्य की संपन्नता के बाद वंकचूल ने सुन्दरी से पूछा- अब कितनी स्वर्णमुद्राएं बची है। सुंदरी ने कहा-730 मुद्राएं!

वंकचूल ने कहा- यहां की जनता हमारी प्रजा है। उन्हें अधिकाधिक संसाधन उपलब्ध करवाना मेरा कर्त्तव्य है। तुम अपनी भाभी के साथ रामपुर जाकर वहाँ से ग्रामवासियों के प्रयोग में आ सके, ऐसा कपड़ा खरीद लाओ ताकि वे शिष्ट एवं सज्जन लोगों की श्रेणी में आ सके।

बची हुई शेष राशि रामपुर के बाजार में उपयोगी सामान की खरीददारी में खर्च करके सुंदरी अपनी भाभी एवं तीन रक्षकों के साथ पुनः लौट आयी।

मकान तैयार होते ही वंकचूल ने सभी को मकान एवं कपड़े वितरित कर दिये। नये मकान व सुंदर कपड़े देखकर पल्लीवासी झूम उठे। उनका जीवन ही बदल गया। कच्चे मकानों की समस्या सदा के लिए समाप्त हो गयी। वंकचूल ने अपने विश्वस्त को नयी चोरी हेतु सतर्क कर दिया।

वंकचूल ने जब अगली चोरी के बारे में कहा तो सागर एवं अन्य साथी सब प्रसन्न हो गये। वे तो पड़े-पड़े वैसे भी मायूस हो रहे थे। पल्ली में उनके पास काम भी क्या था? तीनों समय खाना और पसर जाना।

सागर ने शराब का त्याग कर दिया था। उसके पीछे एक रोमांचक दोस्ती की मिसाल पेश करने वाला संवाद था। सागर की वफादारी भी इसमें अभिव्यक्त हुई थी।

वंकचूल ने सुंदरी और युवरानी के समक्ष शराब छोड़ने की कसम खायी ही थी और इतने में सागर ने बाहर से आवाज लगायी- सरदार! आज आपको मेरे घर पधारना है।

वंकचूल ने मजाक में पूछा- क्यों क्या बात है? क्या आज भाभीजी से लड़ाई हो गयी है जो मनाने में मेरी मदद ली जा रही है?

शरमाते हुए सागर ने कहा-नहीं, सरदार! आपकी कृपा से मेरी धर्मपत्नी परम आज्ञाकारी और पूरी तरह से मेरे संकेत पर चलने वाली है। आज तक उसने कभी भी मेरे किसी भी कार्य में बाधा या हस्तक्षेप नहीं किया है। कभी उसने कोई अपनी स्वतंत्र इच्छा प्रकट नहीं की। उसने आपको मेहमानवाजी के लिए बुलाया है। उसने अपनी देखरेख में विशेष गुणवत्ता वाली शराब तैयार की है। वह आपको शराब अर्पण चाहती है।

वंकचूल चौंका। उसने विचार किया- माथा मुंडाते ही ओले पडे! अभी-अभी तो शराब का त्याग किया है और हाथों हाथ ही परीक्षा की घड़ी आ गयी?

वंकचूल ने आश्चर्य से पूछा-क्या तुम्हारी पत्नी मदिरापान करती है? सागर ने कहा-हाँ! मेरी पत्नी ही नहीं पल्ली की सारी औरतें शराब पीती हैं।

वंकचूल के चेहरे पर नाराजगी प्रकट हो गयी। वह शराब पीता था पर आज तक उसने किसी भी नारी को शराब पीते नहीं देखा था। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि भारतीय संस्कारों में पली-बड़ी हुई कोई नारी शराब में मदहोश अपने संस्कारों की धज्जियाँ उड़ा सकती है।

वंकचूल के आत्मा की खानदानी प्रकट हुए बिना नहीं रही। उसने कहा- सागर! मेरी मान्यता है कि नारी को कभी भी शराब नहीं पीनी चाहिए।

सागर ने धीमे स्वर में प्रतिवाद करते हुए कहा- शराब पीने से बुढ़िया भी जवान औरत हो जाती है।

वंकचूल ने कहा- यह वैसी ही बात है जैसे कोई बुझता हुआ दिया बुझने से पहले तेज प्रकाश देता है। पर फिर तुरन्त बुझ जाता है। शराब पीने से एक बार शरीर में शक्ति खिलती है पर नशा उतरने के बाद वह हमेशा के लिए बुझ जाती है। जिस प्रकार कोई कलि असमय ही मुरझा जाती है वैसे ही शराब की आदत से नारी भी जवानी में ही वृद्ध हो जाती है। खैर चलो! मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ, मैं मात्र दूध लूँगा! पर सरदार! कल तो आपने...

हाँ! मैने आज से शराब का त्याग कर दिया है। मैं सिर्फ अपने जीवन में चोरी का ही नशा करता हूँ।

शराब जीवन के सारे तनाव समाप्त कर देती है। हमारे लिये तो शराब अनिवार्य ही है। कभी-कभी हमें इतनी अधिक थकान हो जाती है कि उसके लिए शराब रामबाण औषधि बन जाती है। आप शराब न छोडे।

वंकचूल ने कहा- शराब से पायी उत्तेजना क्षणिक है। मैं अपनी पल्ली के विकास में ही डूबना चाहता हूँ। मुझे पल्ली के विकास में ही अब रुचि है। सागर ने कहा- आप मेरे मालिक है अगर आप शराब छोड रहे हैं तो मैं भी आज से शराब का त्याग करता हूँ।

वंकचूल ने प्रेम से कहा-दोस्त! इतना बड़ा त्याग करने से पूर्व गम्भीरता से सोचना।

क्रमशः

संवत् 1075 में खरतरगच्छ की उद्भव स्थली ऐसी पाटण नगरी में

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के तत्त्वावधान में
सवा चार सौ वर्ष से अधिक प्राचीन एवं महाचमत्कारी
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी (दादा ना पगला) में 743 वें कुशलगुरु जन्मोत्सव पर
दादागुरुदेव की बड़ी पूजा से सभी को पधारने का_

भावभरा आमंत्रणम्

आशीष-आज्ञा

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति
आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा.

पावन प्रेरक

मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा
साध्वी श्री आज्ञांजना श्रीजी म.सा.

पावन निश्रा

साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5
साध्वी श्री श्रुतदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 2

महोत्सव

दिनांक 30 नवम्बर, 2023
9.00 बजे पूजा
12.30 बजे स्वामिवात्सल्य

विशेष

अध्ययनशील भगवंतो की
वैयावच्च भक्ति की जायेगी।

महोत्सव स्थल

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी (दादा ना पागला)
जीवनधारा सोसायटी, पाटण

निवेदक / आयोजक

कुशल परिवार

सम्पर्क सूत्र : 87807 35483

संयम जीवन की करे सहायता यह है हमारी अष्टप्रवचन माता

आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव अवति तीर्थोद्धारक, युग दिवाकर

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

जो शील के आभूषण से सदा सजी ऐसी है हमारे जिनशासनकी 16 सती

विमल प्रभा प्रिमियर लीग जिन किर्ति सूरी टीम विनर

विमलप्रभा प्रिमियर लीग

अष्टापद भाव यात्रा

प. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का

गुंटूर नगरे आध्यात्मिक चातुर्मास

गुंटूर (आ. प्र.) - 2023

टल जायेंगे आपके सारे नरक जब दूर होंगे आपके 18पापस्थानक

भावो से आज है हम सब इन्द्र इंद्राणी क्यों की आज है, मेरे प्रभु की अष्टप्रकारी

''खुल जा सिम सिम''

पूज्य धवलशस्वी

साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.

नेम राजुल कप्पल शिविर

बच्चे चढ रहे, उपाश्रय की सीढी आइये सिखते है, A,B,C D

तिरुपात्तुर में पंचान्हिका महोत्सव

सांचोर में मार्ग अनावरण

बालोतरा में मची धूम

मुंबई में ओलीजी संपन्न

पाली में अभिषेक

अनुभूति-गुरु विरह की : अभिव्यक्ति श्रद्धालु संघ के प्रति

– मुनि मयूखप्रभसागरजी म.सा.

जयपुर का चातुर्मास एवं प्रतिष्ठा की सम्पन्नता के पश्चात् हमारा विहार प्रारंभ हुआ। पूज्य गुरुदेवश्री का विहार मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, आंध्रप्रदेश होते हुए तमिलनाडु के तिरुपात्तुर की ओर हुआ और पूज्यश्री के आदेश से पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. व मेरा विहार गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, होते हुए तमिलनाडु के तिरपातूर की ओर!

वह धन्य दिन था, जिस दिन तिरपातूर नगर की पावन धरा पर पूज्यश्री के दर्शन पाये।

लगभग 6 महिने के विरह काल की समाप्ति हुई।

पूज्य गच्छाधिपति श्री के 50 वें संयम सुवर्ण वर्ष का ऐतिहासिक 'विरति वधामणा' कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

10 जून के दिव्य-नव्य संयम सुवर्ण वर्ष की वर्धापना कार्यक्रम के पश्चात् शेष कुछ चातुर्मास घोषणाओं का उद्घोष प्रारम्भ हुआ। जिसमें गणिवर्य द्वय मयंकप्रभसागरजी म. व मेहुलप्रभसागरजी म. के कोयम्बतूर संघ की विनंति स्वीकार कर जय बोलाई गई।

दो दिन पश्चात् ता. 12 को तिरुपात्तुर संघ ने गुरुदेव को वर्षावास हेतु विनंति की, हालांकि उनकी विनंती पूज्यश्री को 2 माह से चल ही रही थी। संभावना थी कि साध्वीजी म. का चातुर्मास होगा। पर श्री संघ की भावना थी कि यदि साधु भगवंतों का चातुर्मास होता है, तो संघ को विशेष लाभ मिलेगा।

यह विषय पूज्यश्री के लिये चिंतनीय था क्योंकि निश्रावर्ती समस्त श्रमण भगवंतों की घोषणा हो चुकी थी, चातुर्मास तय हो चुके थे। क्या करना-कैसे करना यह प्रश्न साहिबजी के मन के धरातल पर रह-रहकर उभर रहा था।

योग बना, गुरुदेवश्री ने गहन विचार विमर्श करते हुए गणिवर्य मेहुलप्रभसागरजी म., मेरा व मुनि मंथनप्रभसागरजी म. का चातुर्मास तिरुपात्तुर हेतु घोषित किया।

पूर्व घोषित चातुर्मासों का परिवर्तन आश्चर्यकारी लगा।

यहाँ के संघ में हर्ष का वातावरण स्वाभाविक था तो दूसरी ओर मेरे मन में 10 वर्ष के गुरु सम्पर्क के पश्चात् प्रथम बार हो रहे विरह की वेदना डंक मार रही थी! कैसे होगा... क्या होगा... विरह के काले बादलों तले क्या मैं अपने मन को स्वाध्याय आदि सत्प्रवृत्ति की अग्नि में तपा पाऊंगा? इत्यादि अनेक विचारमाला के मोती मुझे साधना के शिखर का स्पर्श करवाने में बाधित बन रहे थे।

पर कहते हैं- प्रकृति व नियति की परम्परा को शासन अधिपति भी नहीं तोड़-जोड़ सके तो फिर मेरे मनोगत भाव वो क्या काम करेगें।

योग के संयोग को तहत्ति कहकर बात स्वीकार करनी पडी।

गुरु के विरह अग्नि की तपन स्वाभाविक सहन करनी होगी, इस आशय से पूज्यश्री के कर युगलों को पकड़ उन्हें विदाई देने हेतु कदमों को मजबूत करते हुए आगे बढ़ना पड़ा। वर्षावास चैन्नई होने से उस दिशा के लिए पूज्यश्री गतिशील बने।

उन पलों की कल्पना भी मेरे लिए मानो एक स्वप्न सा था, क्योंकि जिस गुरु की छाँव में ही मैंने अपने जीवन के आनंद की सीमा पाई थी, अब उन्हीं गुरु के चरणों का परम स्पर्श पुनः करीबन 7 महिने पश्चात् मिलेगा। यह कल्पना मानो 'पाँवों तले जमीन खिसकना' इस बात को चरितार्थ कर रही थी।

बहती अश्रुधारा... बिलखते मन ने गुरु के कर कमलों

से आशीष पाते हुए उन्हें विदाई दी।

अब तन और मन दोनों को चातुर्मास हेतु तिरुपात्तुर संघ के लिए प्रयत्नशील बनाना पड़ा।

वर्षावास प्रवेश हेतु करीब 20-25 दिन की अवधि शेष थी, उस काल में हमने निकट कृष्णगिरि तीर्थ की स्पर्शना हेतु विहार किया और 15-20 दिन की स्थिरता पश्चात् पुनः तिरुपात्तुर वर्षावास प्रवेश हेतु आए।

अति उत्साह पूर्वक प्रवेश सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास प्रारम्भ हुआ, गुरुदेव से अलग चातुर्मास करने का पहला कदम तिरुपात्तुर का बना। स्वाभाविकता थी कि कुछ-कुछ जिम्मेदारियों का निर्वहन करना था।

कहावत याद आती है- विशाल वटवृक्ष के अन्तर्गत हर छोटा पौधा निश्चिंतता का जीवन जीता है।

वैसे ही अध्यात्म क्षेत्र के जगत् में जब हम झांकते हैं तो पाते हैं कि गुरु निश्रा में रहता हुआ हर शिष्य निश्चिंतता के सागर में हिलोरें लेता है।

हर सद्गुरु अपने शिष्य को आगे बढता देख मानो सातवें आसमान को स्पर्श करने की प्रसन्नता को प्राप्त करते हैं। यही महानता उनके व्यक्तित्व को गुरु पद पर स्थापित करती है।

पर जब मैंने अपने आपको इस चातुर्मास की भूमिका-भूमि पर रहते हुए पाया तो लगा कि श्रम का श्रेय अपने कंधों पर जब आता है, तभी पता चलता है कि अभी तक वह कितना सक्षम बन पाया है!

प्रवचन के समय उमडता जनसमूह और संध्या में पुरुष वर्ग के साथ धर्मचर्चा रूप क्लास का आयोजन जिनमें 50 से अधिक श्रावक उपस्थित होते थे! यह माहौल नई अनुभूति करवा रहा था।

यह सारी क्रिया-प्रक्रिया हर चातुर्मास में श्रमण-श्रमणी महाराज को अपनी अपनी योग्यतानुसार निभानी ही होती है, पर मेरा मन तो इस बात को बताने के लिए अति आतुर है कि जिस तिरुपात्तुर संघ में चातुर्मास गतिमान है, इस भू-धरा का पुण्य प्रभाव और बच्चे-बच्चे में धर्म जागृति का प्रभाव कितना अद्भुत है! कुछ अनूठा वातावरण है यहाँ का जो इतने वर्षों की सीमा में मैंने और कहीं नहीं, यहाँ पर पाया।

मैंने यहाँ पाया.. प्रतिदिन प्रातःकाल की नीरव वेला में श्री संघ के नन्हें मुन्हें बच्चे जो 7-7:15 बजे स्कूल हेतु निकलते हैं, उन बच्चों के संस्कार जन्म से ही ऐसे स्थापित हो गए हैं कि वे प्रभु पूजा किए बिना अन्य किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ नहीं करते हैं। वे बच्चे सुबह 6:30 बजे आकर स्नात्र पूजा करते हैं, कोई अष्टप्रकारी पूजा तो कोई समयाभाव की वजह से पक्षाल करके अपने दिन का प्रारम्भ करते हैं।

सुबह जब मंदिर जाना होता है, तब मेरी आँखें प्रभु शासन के प्रति अहोभाव से भर जाती है। क्या अद्भुत शासन है मेरे वीर का!

यहाँ का अद्भुत मंदिर है, जहाँ वर्षों से पुजारी नहीं है, सम्पूर्ण व्यवस्थाओं का उत्तरदायित्व समाज के लोग, बच्चे करते हैं।

जहाँ कोई भी पंच कल्याणक आदि पूजा पढ़ानी हो, हर बच्चा तत्पर रहता है। नगर के अधिकतम लोगों की जिह्वा पर नवपद पूजा आदि पूजाएँ कंठस्थ है! ऐसी अद्भुत व आश्चर्यकारी व्यवस्थाओं के पुष्प यहाँ के इस तिरपातूर नगर रूप उपवन में महकते हैं।

सबसे अनुमोदनीय बात तो यह है कि यहाँ के करीबन 25-30 अजैन परिवार जिन धर्म-दर्शन की शिक्षा से पूरी तरह से जुडे हैं। वे दृढ़ता से शासन अनुरागी बने हैं। जिन परिवारों में जन्म से मांसाहार का भक्षण होता हो, वे परिवार आजीवन प्रभु की आज्ञा का मुकुट धारण करने में प्रतिपल सौभाग्य का अनुभव कर रहे हैं।

200 से अधिक लोगों ने आजीवन मांसाहार त्याग करने का नियम लिया। उन परिवारों को प्रत्येक माह गुप्त परिवार द्वारा अनुकम्पा दान दिया जाता है।

वर्तमान के इस modern culture में जहाँ जैन परिवार में जन्मा-पला-बढा व्यक्ति भी जैनत्व के मूल सिद्धान्तों की राहों पर चलने हेतु कटिबद्ध नजर नहीं आता, वहाँ अजैन कुल परिवार में जन्म लेकर धर्म का योग प्रयोग

अजैन तमिल हैं। उन्हें हिन्दी लिखना-पढ़ना बहुत दूर की बात, बोलना भी नहीं आता हैं। उन बच्चों ने पंच प्रतिक्रमण पूर्ण कर आगे का स्वाध्याय शुरु किया है।

इस कल्याणकारी वर्षावास के अन्तर्गत 11 बच्चों ने निरन्तर 99 बियासना कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। 6 से 15 वर्ष की उम्र के बच्चों ने यह तप किया। 5 अजैन बच्चों ने भी इस तप में भाग लिया।

कई अजैन पुण्यात्माओं ने तो आजीवन कंदमूल व रात्रि भोजन का भी त्याग किया।

दादा गुरुदेव ने जो कार्य किया था, लाखों अजैनों को परमात्मा का धर्म अर्पण किया था। वैसा ही कार्य करते हुए यहाँ के परम प्रभु भक्त, शासन प्रेमी लोग अजैनों को जैन बनाने का सुप्रयास कर रहे हैं।

जब मैं इन बच्चों व यहाँ के श्रद्धालुओं की श्रद्धा भक्ति को देखता हूँ तो अन्तर में शासन प्रेमी बनने की श्रद्धा मजबूत होती है। यहाँ के श्रद्धालु मेरे लिये प्रेरणा पुंज हैं।

ऐसी भूमि का पुण्य प्रभाव ही व्यक्ति को आन्तरिक प्रसन्नता व सहज शान्ति समाधि देता है।

दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि

0 नीलम जैन, बाडमेर

गढ़ सिवाना राजस्थान में जन्मे गुरु प्यारे,
जयंतश्री जैसलजी के कुल को सदा संवारे।
कृष्ण मिगसर तीज संवत 1337 के दिन,
छाजेड़ गोत्र के सितारे चमके थे उस दिन।
करमण नाम था अमृत वाणी गुरु की सदा सुनते,
चेतन मन संयम की लगन को रहे सदा बुनते।
सानिध्य पाई जिनचंद्र सूरी की मिली छत्र छाया,
दस वर्ष की आयु में रजोहरण का पुष्प खिलाया।
फागुन शुक्ला आठम 1346 के दिन सब छोड़ा,
कुशल मुनि बन सांसारिक सुखो से मुख मोड़ा।
जेष्ठ कृष्णा इग्यारस 1373 था अति उत्तम,
पाटन नगरी उपकारी लहरा आचार्य पदवी से परचम।
हृदय में बसे गुरुदेव वाणी मधुर सहज सरोवर,
सुंदर उपदेश तपती राह के बने गुरु तरुवर।
फागुन कृष्ण अमावस्या बड़ी ही थी दुखदाई,
पूज्य गुरुवर की स्वर्ग समाधि मोक्ष मुक्ति पाई।
1379 को देराउर पाकिस्तान में अंतिम हुई विदाई,
सजल नयन मन हुआ भारी छोड़ी गुरु ने कलाई।
नीलम हृदय में बसे गुरुवर हाजिर हुजूर हमारे,
भवसागर में नाव को तारे गुरुवर साथ हमारे।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव अर्वति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 9 का चातुर्मास अत्यन्त आनंद मंगल के साथ ऐतिहासिक रूप से चल रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप की आराधना चल रही है। ता. 16 नवम्बर को मोक्षमाला और ता. 17 नवम्बर को पारणे के बाद पूज्यश्री विहार कर वेपेरी पधारेंगे, जहाँ श्री मुलतानमलजी छाजेड परिवार पादरु निवासी परिवार की ओर से त्रिदिवसीय जीवित महोत्सव का आयोजन होगा।

ता. 3 दिसम्बर से श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ होगा। ता. 8 दिसम्बर को प्रतिष्ठा के पश्चात् 10 दिसम्बर को यहाँ से सेलम की ओर विहार होगा। वहाँ ता. 21 जनवरी को श्री सीमंधर स्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पश्चात् बैंगलोर की ओर विहार होगा। वहाँ मागडी रोड श्री सुमतिनाथ मंदिर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 11 फरवरी को संपन्न कराकर पूज्यश्री का विहार बल्लारी की ओर होगा। जहाँ पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 8 मार्च को संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री का महाराष्ट्र की ओर विहार होगा।

संपर्क- मुकेश प्रजापत- 79871 51421, वाट्सप- 98251 05823

नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

श्री विक्रमपुर (राज.)

द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Administrotor
Shri Dharmendra Khajanchi
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 (जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

श्री खेतासर (राज.)

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

चिंतादरी पेट मंदिर की जीर्णोद्धार हेतु चल प्रतिष्ठा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक युगदिवाकर गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चिंतादरी पेट चेन्नई स्थित श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ हुआ।

पूज्यश्री की पावन निश्रा में श्री महावीर स्वामी, श्री शांतिनाथ, श्री धर्मनाथ, श्री सीमंधर स्वामी आदि जिन प्रतिमाओं का विधि विधान पूर्वक उत्थापन किया गया।

बाद में विधि विधान पूर्वक परमात्मा की चल प्रतिष्ठा की गई। इस विधि विधान हेतु ता. 23 अक्टूबर 2023 को पूज्य गुरुदेव श्री एवं पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. तथा पू. साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म. श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. दादावाडी से विहार कर चिंतादरी पेठ गुरु मंदिर पधारे। जहाँ से सामैया प्रारंभ हुआ। जिन मंदिर चैत्यवंदन आदि विधि विधान के पश्चात् कुंभ स्थापना, दीप स्थापना आदि विधान संपन्न हुआ।

बाद में शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा के उत्थापन विधान होकर चल प्रतिष्ठा संपन्न हुई। सुप्रसिद्ध बंधु बेलडी श्री मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा ने भक्ति पूर्वक चढावे संपन्न करवाये।

मूलनायक परमात्मा के उत्थापन व बिराजमान का लाभ श्री सिमरथमलजी महावीरचंदजी भुरट एण्ड संस ने, श्री शांतिनाथ का लाभ सौ. चंचलबाई किशनचंदजी कटारिया ने, श्री धर्मनाथ प्रभु का लाभ श्री सुखलालजी मिश्रीलालजी सुपारसचंदजी बैद परिवार ने, श्री सीमंधर स्वामी का लाभ श्री सुखलालजी मिश्रीलालजी प्रकाशचंदजी बैद परिवार ने, ब्रह्मशांति यक्ष का लाभ श्री प्रेमचंदजी दिनेशकुमारजी कटारिया परिवार ने, सिद्धायिका देवी का लाभ श्री सुखलालजी मिश्रीलालजी बैद परिवार ने तथा महालक्ष्मी का लाभ श्री गौतमचंदजी विकासजी कटारिया परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के अवसर पर झालर का लाभ श्री लक्ष्मीराजजी हेमन्तकुमारजी गौतमकुमारजी बच्छावत परिवार मेसर्स जर्दा हाउस ने, कंकु छापा का लाभ श्री अनोपचंदजी गौतमजी गोलेच्छा ने लिया।

प्रतिष्ठा के पश्चात् गुरु पूजन किया गया। जिसका लाभ श्री सुखलालजी मिश्रीलालजी गौतमचंदजी बैद परिवार ने लिया। द्वारोद्घाटन का लाभ श्री प्रकाशचंदजी किशोरकुमारजी नाहर परिवार ने लिया।

शिखरबद्ध मंदिर बनने तक सभी ने इच्छित वस्तु के त्याग का संकल्प लिया।

चेन्नई में आत्मस्पंदन उपधान तप मोक्षमाला 16 नवम्बर को

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक युगदिवाकर गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 9 एवं पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 12 तथा पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 की पावन निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप की आराधना चल रही है। लगभग 40 श्रावक व 160 श्राविकाऐं उपधान तप की आराधना कर रहे हैं, जिनमें शताधिक प्रथम उपधान वाले हैं। श्री मुनिसुव्रत जिनकुशलसूरि जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में चल रहे इस उपधान तपाराधना के मुख्य लाभार्थी का लाभ नागोर निवासी श्रीमती किरणदेवी प्रसन्नचंदजी रवीन्द्रकुमारजी विमलेशजी डागा परिवार ने लिया है।

मोक्षमाला के उपलक्ष्य में पंचाह्निका कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। ता. 13 नवम्बर से प्रारंभ इस महोत्सव में प्रथम दिन वीर विरह महावीर गौतम का संवेदनात्मक कार्यक्रम होगा। दूसरे दिन ता. 14 नवम्बर को नये वर्ष की महामांगलिक, गौतम रास आदि कार्यक्रम के साथ दोपहर में पंच परमेष्ठी पूजा होगी। ता. 15 नवम्बर को मोक्षमाला का भव्य वरघोडा होगा। वरघोडे के बाद दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी। ता. 16 नवम्बर को मोक्षमाला का विधान होगा। तपस्वियों का पारणा 17 नवम्बर को होगा।

समुदाय के चातुर्मासों की घोषणा 26 अप्रेल को इचलकरंजी में

खरतरगच्छ गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के समुदाय वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वियों के आगामी चातुर्मासों की घोषणा इचलकरंजी नगर में ललवानी परिवार द्वारा निर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. 26 अप्रेल 2023 को की जायेगी।

आकोला जिन मंदिर एवं दादावाडी अंजनशलाका 28 जून को

महाराष्ट्र के आकोला नगर में पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी प्रवरा श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रावर्ती पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से चौदह राजलोक के अनूठे आकार में बने श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा आषाढ वदि 7 शुक्रवार 28 जून 2024 को संपन्न होगी।

आकोला का ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष श्री रमेशकुमारजी गोलेच्छा के नेतृत्व में चेन्नई नगर में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सेवा में प्रतिष्ठा की विनंती करने पहुँचा।

ट्रस्ट मंडल ने पूज्यश्री से प्रतिष्ठा कराने व मुहूर्त्त प्रदान करने की भावभीनी विनंती की, जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त घोषणा से सकल श्री संघ में आनंद मंगल का वातावरण छा गया।

श्री सिवांची जैन भवन में रहा एक दिवसीय प्रवास

आध्यात्मिक संस्कारों से जीवन बनता उच्च : जिनमणिप्रभसूरि

परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. आदि साधु साध्वीवृंद का बाजते गाजते श्री सिवांची जैन भवन, साहुकारपेट में पगलिया हुआ। प्रवेश के पश्चात् प्रवचन हुआ।

विशाल धर्मपरिषद् को सम्बोधित करते हुए सिवांची गौरव आचार्य प्रवर ने कहा कि जीवन के सम्यक् निर्माण के लिए सम्यक् संस्कारों का होना जरूरी है।

विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए गुरुवर ने कहा कि जैन समाज द्वारा सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर अनेक शिक्षण संस्थानों का संचालन होता है। हमारा दायित्व बनता है कि भावी पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण के लिए अभिभावक अपने बच्चों को उन विद्यालय में पढ़ाये। विद्यालय मैनेजमेंट भी जैनत्व के संस्कारों को पुष्ट करने वाले पाठ्यक्रमों का अध्ययन छात्र छात्राओं को करवायें।

आचार्य श्री ने कहा कि हमारे सामाजिक रीति रिवाजों में भी जैनत्व की झलक हो। शादी विवाहों से अनावश्यक आडम्बरों से दूर रहे। पदार्थों की सीमा करे। रात्रिभोज, जमीकंद का प्रयोग नहीं करे।

परम पूज्य आचार्य श्री ने समाज में पनप रही सामाजिक विषमताओं को मिटाने के लिए विशेष प्रकाश डाला।

आपने कहा कि समाज को स्वच्छ और साफ रखना एक संस्कार है। विषमताओं को दूर करने के लिए सिवांची समाज को संगठित होकर इस प्रकार की बुराइयों से लड़ना होगा।

आचार्य प्रवर के सान्निध्य में अकोला जैन संघ, आगोलाई जय संघ एवं मालेगांव जैन समाज से श्रावक श्राविकाएं संघ बद्ध पधारे थे।

श्री सिवांची जैन संघ द्वारा अतिथि महानुभावों का अभिनंदन किया गया। स्वागत स्वर श्री सिवांची मद्रास जैन संघ के अध्यक्ष श्री जयन्तीलाल बागरेचा ने दिया। श्री सिवांची जैन युवा मंडल और श्री सिवांची जैन महिला मंडल की ओर से मधुर वाणी में स्वागत गीत पेश किया गया। पूज्य प्रवर के सान्निध्य का लाभ उठाने के लिए सैकड़ों संघ सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम आयोजन में पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी समिति सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा।

त्रिदिवसीय 'ज्ञान-ध्यान-योग' शिविर सम्पन्न

निम्बाहेड़ा नगर में 23 वर्षों के अन्तराल बाद पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से पूज्या स्पष्ट वक्ता मालव मेवाड़ ज्योति एवं मेवाड़ सिंहनी साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म. सा. के भव्य ऐतिहासिक चातुर्मास कराने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ।

प्रवेश के पश्चात् दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सूरि महाराज की 869 वीं पुण्य तिथि पर संगीत मय पूजा एवं गुरुप्रसादी का आयोजन हुआ। इसी क्रम में लब्धि निधान-श्री गौतम स्वामी की भव्य आराधना एवं एकासने, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान के सामूहिक तेले की आराधना हुई। वर्षावास में भक्तामर महापूजन, दादा गुरुदेव महापूजन, खरतरगच्छ दिवस, संगीतमय दादागुरुदेव का 108 गुरू इकतीसा एवं गुरु प्रसादी, पुणिया भावक की सामूहिक सामायिक एवं लघु नाटिका श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महाभिषेक पूजन, महान चमत्कारी नवकार मंत्र की सामूहिक नौ दिवसीय एकासना आराधना एवं समापन पर भव्य वरघोड़ा एवं स्वामी वात्सल्य, भी नाकोड़ा भैरव महापूजन मय संगीत के आयोजित किये गये।

दिनांक 9 अक्टूबर से 11 अक्टूबर कपल ज्ञान-ध्यान योग-शिविर का आयोजन हुआ। इसमें 20 वर्ष से 70 वर्ष तक के श्रावकों ने भाग लिया। इस शिविर में परमात्मा की सेवा पूजा आदि कार्यों में विवेक रखने संबंधी जानकारी प्रदान की गई। तीनों दिन शिविरार्थियों के लिए प्रसादी का आयोजन लाभार्थी परिवार द्वारा रखा गया। इसके समापन पर शिविरार्थियों को धन्यवाद देते हुए प्रत्येक शिविरार्थी को ससम्मान पूर्वक लाभार्थी परिवार द्वारा उपहार दिया गया।

तिरुपातुर आंगणे पंचान्हिका उत्सव

तिरुपातुर 29 Oct.। तिरुपात्तुर नगर में गतिमान कल्याणकारी वर्षावास के अन्तर्गत परम गुरुभक्त गुप्त परिवार द्वारा आयोजित पंचाह्निका उत्सव प्रभु भक्तिमय संपन्न हुआ।

प.पू. गुरुदेव युग दिवाकर खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पू. गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में यह महोत्सव सम्पन्न हुआ। ता. 27-9-23 से प्रारम्भ हुए इस उत्सव की पूर्णाहूति ता. 1-10-2023 को हुई।

प्रथम दिवस 'उत्साह दिवस' के रूप में आरम्भ हुआ। इस दिन मुनि मंथनप्रभसागरजी म. ने 'प्रभु भक्ति जीवन का पाथेय' इस विषय पर प्रवचन दिया। दोपहर में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा व शाम को भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

द्वितीय दिवस 'उल्लास दिवस' के रूप में मनाया गया। प्रातः काल गुरु भगवंत के मार्मिक प्रवचन के पश्चात् ज्ञान गंगोत्री-माँ सरस्वती का महापूजन हुआ जिसमें नगर के बच्चों ने बढ़-चढकर भाग लिया। सरस्वती मंत्र प्रदान व रक्षापोटली अभिमंत्रण विधान संपन्न करवाते हुए मंत्रदीक्षा दी गई। शाम को स्थानीय बहू मंडल द्वारा ड्रामा की सुन्दर प्रस्तुति की गई।

तृतीय दिवस 'उमंग दिवस' में प्रवचन- दादा गुरुदेव आधारित हुआ, जिसमें पू. गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. व पू. मुनि मयूखप्रभसागरजी म. ने दादा गुरुदेव के उपकारों का वर्णन सरल शैली में प्रस्तुत किया।

दोपहर में दादा गुरुदेव के महापूजन का आयोजन श्रद्धालुओं के लिए अति आनंददायक बना। रात्रि में मुम्बई निवासी विख्यात संगीतकार नैतिक मेहता द्वारा अद्‌भुत भक्ति की रमझट मचाई गई, लोगों ने झूम-झूमकर अपनी अन्तरभक्ति को प्रस्तुत किया।

चतुर्थ दिवस 'उद्यापन दिवस' को पू. गणिवर्यश्री व मुनि मयूखप्रभसागरजी म. ने जिनशासन में उद्यापन की महिमा की महानता का सुन्दर वर्णन करते हुए कहा कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र के उपकरणों की वन्दना, उन्हें बधाने का अवसर हमें उद्यापन के माध्यम से प्राप्त होता है।

प्रवचन के पश्चात् उद्यापन वाटिका का उद्घाटन रखा गया। जिसका अनूठा लाभ सौ. कविकला ललितजी कवाड़ परिवार ने 6 माह में 3600 नवकार मंत्र की माला का जाप करने का संकल्प लेते हुए प्राप्त किया।

इस उद्यापन वाटिका को खूब सुन्दर व रोचक तरीके से जंगल का रूप देते हुए बनाया गया। जिसके दर्शन का लाभ पूरे दिन भक्तों ने लिया।

महोत्सव के शिखर के रूप में मंदिरजी में लघु शांतिस्नात्र महापूजन का आयोजन किया गया। नगर के सभी जनों में इस महापूजन का अपार उत्साह था। महापूजन के अंत तक उपस्थिति रही। स्नात्र महोत्सव में प्रभु भक्ति व महापूजन की भव्यता का दिव्य वातावरण बना। शाम को सरगम ग्रुप बैंगलोर द्वारा विशेष प्रस्तुति हुई जिसमें नन्हें बच्चों ने अपना हूनर संगीत व नाट्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।

अंतिम दिन 'आत्म उद्घाटन दिवस' प्रात: 6:30 बजे सरगम ग्रुप द्वारा जिनालय में ढोल-नगाडों व वाजिंत्रों के साथ पार्श्व प्रभु का महाअभिषेक किया गया, जिसमें औषधि युक्त जल व पुष्पों द्वारा परमात्मा की अनूठी भक्ति की गई। तत्पश्चात् 'नरक वेदना की संवेदना' इस विषय पर पू. गणिवर्यश्री एवं पू. मुनि मयूखप्रभसागरजी म. ने कहा कि पाप करने के बाद वेदना को नारकी जीव कैसे सहन करते हैं, इस विषय पर प्रतिबोध देकर पाप से बचने का पुरुषार्थ कर सके, ऐसा संकल्प दिलवाया।

प्रवचन के तुरन्त बाद AVS Mahal में Horror Hell Show & Exhibition Show का उद्घाटन सुरेशजी गुलेच्छा ने किया। इस Exhibition में 11 Stall जैन दर्शन आधारित अलग-अलग विषयों पर रखे गए जिसमें संघ की महिलाओं व बच्चों द्वारा Presentation दिया गया बाहर से आए लोगों ने इस Exhibition द्वारा बहुत कुछ पाया व जाना। उसी के ऊपर प्रथम मंजिल पर Horror Hell Show की रचना मानो साक्षात् नरक को दर्शाती हो ऐसा सर्जन किया गया जिसमें संघ के युवा व बच्चों द्वारा परमाधामी व नारकी जीवों का Roll Play किया गया। देखने वाले दर्शकों की आंखें भर आई। जीवन में पाप का प्रायश्चित्त मानो हृदय को झंकृत कर रहा हो। पांचों दिन शाम को अल्पाहार की व्यवस्था गुप्त परिवार की ओर से रखी गई।

अन्तिम तीन दिनों की शाम की प्रस्तुति में लक्की ड्रॉ खोले गए जिसमें स्वर्ण व रजत मुद्राओं का वितरण किया गया।

-जैन संघ तिरुपातुर

मुनि मंथनप्रभसागरजी म. द्वारा वर्धमान तप का पाया

प.पू. युग दिवाकर आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य, पू. गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. के शिष्य पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म. द्वारा वर्धमान तप का प्रारंभ किया गया। दिनांक 1 नवंबर को पांचवीं ओली का पारणा शातापूर्वक संपन्न हुआ। 20 दिवसीय तपाराधना में निरंतर स्वाध्याय एवं ओली के प्रवचनों द्वारा जन मानस के समक्ष नवपद एवं श्रीपाल कथा का विवेचन प्रस्तुत किया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से पू. मुनिश्री के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

वर्धमान ओली का पाया भरा

प.पू. प्रवर्तिनीजी श्री प्रमोद श्रीजी म.सा. की प्रशिष्याएँ साध्वी श्री योगरुचि, साध्वी श्री तन्मयरुचि एवं साध्वी श्री आराध्यरुचि श्रीजी ने आसोज कृष्णा दशमी से वर्धमान तप की ओली का पाया रखा।

साध्वी त्रय ने सतत जागृति पूर्वक निरन्तर संस्कृत एवं तत्वज्ञान का स्वाध्याय करते हुए तप की आराधना सम्पन्न की।

गुरुवर्या प.पू. बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. ने साध्वीत्रय की आराधना की अनुमोदना करते हुए कहा- काफी समय से इनकी भावना थी। आज इनकी भावना साकार हुई। सबसे अच्छी बात यह थी कि तप की अवधि में भी इन तीनों ने स्वाध्याय, गाथा एवं पढ़ाई में प्रमाद नहीं किया।

मेरी शुभकामना है कि साध्वीत्रय इसी प्रकार निरन्तर अप्रमत्त रहकर आत्मविकास में प्रगति करते रहे।

कोयम्बतूर में नवपदजी की ओली

जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, कोयम्बतूर के तत्वावधान में परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म. सा. के आज्ञानुवर्ती परम पूज्य स्थविर मुनिराज श्री मुक्तिप्रभ सागर जी म. सा. एवं परम पूज्य प्रवचनकार गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागर जी म. सा. की पावन निश्रा में नवपद की आराधना सानंद सम्पन्न हुई। पूज्य गणीवर्यजी ने नवपद की व्याख्या बड़े ही सुंदर भावों से समझाई। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए नवपद की आराधना आवश्यक है। उसके बिना मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते हैं। नवपद ओली जी के निमित्त 10 दिन की पूजा का आयोजन किया गया।

Open Book Exam

मनोहर स्पर्शना ग्रंथ का मनोहरमय विमोचन

रायपुर, एमजी रोड स्थित जैन दादाबाड़ी में नवकार दरबार महोत्सव के अंतर्गत विजया दशमी को छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता परम पूज्य मनोहर श्रीजी म.सा. की 18वीं पुण्यतिथि निमित्त नवकार जपेश्वरी परम पूज्य शुभंकरा श्रीजी म. की पावन निश्रा में भव्यता के साथ मनोहर स्पर्शना ग्रंथ का विमोचन हुआ, यह ग्रन्थ पू. मनोहर श्रीजी म.सा. के जीवन पर आधारित है जिसकी लेखिका कुमारी कोमल गोलछा, फलोदी और संयोजिका परम पूज्य वसुंधरा श्रीजी म.सा. है। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सरोज जी गोलछा, राजनांदगांव ने किया।

Open Book Exam में भाग लेने के लिए 8875757541 पर संपर्क करें।

मुमुक्षुओं को करवाई जायेगी तीर्थों व चारों दादा धाम की यात्रा

पूज्यपाद गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म. की पावन प्रेरणा से गच्छीय मुमुक्षुओं का तीर्थयात्रा संघ का आयोजन किया जा रहा है।

यह यात्रा संघ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के संयम स्वर्ण वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। यह संघ तिरपातूर यात्रिक संघ की ओर से आयोजित हो रहा है। इस संघ का आयोजन ता. 22 दिसम्बर 2023 से 2 जनवरी 2024 तक होगा। यह संघ तिरपातूर से गिरनार, पालीताना आदि गुजरात के प्रमुख तीर्थों की यात्रा करता हुआ राजस्थान के जीरावला, भैरूतारक धाम, जहाज मंदिर आदि तीर्थों की यात्रा करेगा। तत्पश्चात् चारों दादा धाम- अजमेर, महरौली, मालपुरा, बिलाडा आदि तीर्थों की यात्रा करेगा।

सांचौर में जिनदत्त सूरि व जिनकुशलसूरि मार्ग

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-सांचौर (सत्यपुर) के तत्वावधान में प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म. सा. की प्रेरणा से एवं प. पू. माताजी म.सा. श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. एवं प. पू. बहिन म.सा. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की निश्रा में माननीय मंत्री महोदय श्री सुखरामजी विश्नोई एवं सभापति महोदय भी नरेशजी सेठ के कर कमलों द्वारा सांचोर नगरे श्री शान्तिनाथजी जिनालय कुशल भवन के मार्ग का नामकरण दादाश्री जिनकुशलसूरि मार्ग तथा दाडावाड़ी मार्ग का जिनदत्त सूरि दादावाडी मार्ग नामकरण करने पर समस्त जैन समाज ने इनका आभार प्रकट किया। इस ऐतिहासिक कार्य में जिनका पुरुषार्थ रहा, उनकी भावभीनी अनुमोदना की गई।

मुंबई में हुआ आसोज मास की ओली का आयोजन

धर्म नगरी मुंबई में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में आसोज मास की शाश्वती ओलीजी का आयोजन भव्य रुप से किया गया।

प. पू. खरतरगच्छाधिपति युग दिवाकर आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म सा, की आज्ञानुवर्तिनी सरल स्वभाविका संयम साधिका प. पू. श्री कल्पलताश्रीजी म. सा. की निश्रावर्ती प. पू. प्रशमिताश्रीजी म सा, प. पू. श्री अर्हमनिधीश्रीजी म सा, प. पू. श्री भव्यप्रियाश्रीजी म सा आदि ठाणा की शुभ निश्रा में 80 से अधिक आराधकों ने ओलीजी की आराधना की। मुंबई के खरतरगच्छ भवन में इसका आयोजन किया गया। दि 20अक्टूबर 2023 को ओलीजी तप प्रारंभ कर ओलीजी तप पूर्णाहुति शनिवार दि 28/10/23 को हुई।

आसोज सुदी पूर्णिमा दि. 28 अक्टूबर 2023 को ओलीजी के उपलक्ष्य में सिद्धि दायक श्री नवपदजी पूजन का आयोजन किया गया था। संपूर्ण आयोजन का लाभ सांचौर (सत्यपुर) निवासी श्रीमती तगीदेवी नारायणमलजी श्रीश्रीश्रीमाल मोलाणी परिवार ने लिया। रविवार दि. 29 अक्टूबर को सभी आराधकों का भव्य पारणा हुआ। संघ व समाज के क ई महानुभावों ने पधारकर आराधकों एवं कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन किया। श्री संघ द्वारा लाभार्थी परिवार को धन्यवाद देते हुए उनका बहुमान किया गया। अध्यक्ष मांगीलाल जैन एवं महामंत्री कांतिलाल बोकड़िया द्वारा आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान देनेवाले सभी सदस्यों, केयुप एवं महिला परिषद् का भी आभार व्यक्त किया गया।

धनपत कानुंगो, मुंबई

ज्ञान वाटिका छात्रों का अभिनंदन

प.पू. युग दिवाकर गच्छा. आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पू. गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में तिरूपातूर नगर में ज्ञान वाटिका के तेजस्वी एवं उत्तीर्ण बालक-बालिकाओं का भव्यता के साथ अभिनंदन किया गया।

दि. 28-10 को रात्रि में प्रभु भक्ति का आयोजन किया गया। भक्ति हेतु मुंबई से मंथन भाई को विशेष रूप से बुलाया गया। भक्ति के दौरान 99 बियासना के तपस्वी बालक-बालिकाओं के तप-भावों की अनुमोदना की गई। जिसमें 5 अजैन व तमिल बच्चों ने भी 99 बियासना कर शासन में अपना अमूल्य स्थान निश्चित किया। 6 वर्ष से 13 वर्ष तक के बच्चों ने इस बियासना तप को पूर्ण कर प्रभु का अनुग्रह मान अपने हृदय को भक्ति भाव से जोडा।

भक्ति में मुंबई से पधारे शासन भाई शाह ने संवेदनाओं द्वारा संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला एवं तपस्वी बच्चों के शासन राग की प्रशस्ति गाई।

दि. 29-10 को ज्ञान वाटिका के टीचर्स एवं 55 से अधिक छात्र-छात्राओं का अभिनंदन किया गया। चातुर्मास दरम्यान पोइंट कार्ड के आधार पर 20 बच्चों को स्वर्ण गिन्नी से एवं शेष बच्चों को चांदी की गिन्नी से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पू. गणी मेहुलप्रभसागरजी म. ने कहा कि आज का यह बच्चों का सम्मान भविष्य के संघ का सम्मान है, जो गांव के उज्ज्वल भविष्य की यशोगाथा गायेगा। उन्होंने कहा कि लक्ष्मण कवाड आदि पूरी टीम ने ज्ञान वाटिका के बच्चों को निरंतर शिक्षित करने का जो भगीरथ कार्य किया व कर रहे हैं, वह श्लाघनीय है।

पू. मुनि मयूखप्रभसागरजी म. ने बच्चों के ज्ञान साधना की अनुमोदना करते हुए कहा कि अन्यत्र ज्ञान वाटिकाओं में ज्ञानाभ्यास दिखाई देता है, पर यहां ज्ञानाभ्यास के साथ प्रभु भक्ति, सामायिक-प्रतिक्रमण एवं तपस्या का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। जिससे हमारा मन अत्यंत प्रफुल्लित है। उन्होंने Baloon का उदाहरण देते हुए कहा कि बच्चों के भविष्य को ऊंचाई तक पहुँचाने का कार्य संघ ही कर सकता है।

कार्यक्रम के दौरान टीचर्स का चंदन की ठवणी से अभिनंदन किया गया। संघ के अनेक सदस्यों द्वारा सभी बच्चों व टीचर्स का विशिष्ट बहुमान किया गया। प्रोग्राम के दौरान संघ में ज्ञान वाटिका के प्रति अपूर्व उत्साह देखा गया। 99 बियासना करने वाले बच्चों को फ्रीज, साइकिल, सुटकेस इत्यादि उपहार से पुरस्कृत किया गया। चातुर्मास दरम्यान सबसे ज्यादा गाथा याद करने वाली कु. पीयूषा धनराजजी गुलेच्छा, आराधना कार्ड में ज्यादा पोइंट अर्जित करने वाली कु. चंदन धनराजजी गुलेच्छा, सबसे ज्यादा प्रभु भक्ति में अग्रसर रहने वाली कु. तेजल अजितजी कवाड व कु. शिक्षा लक्ष्मणजी कवाड को गुरु भगवंत द्वारा अवार्ड दिया गया।

बच्चों के अभिनंदन हेतु सकल संघ के सर्वाधिक सदस्यों की उपस्थिति रही। सभी ने तालियों और जयघोष द्वारा बच्चों का उत्साह वर्धन किया। सकल संघ का प्रोत्साहन पाकर बच्चों की ज्ञान वाटिका में निरंतर जुडे रहने की अनुभूति प्रकट हुई। इस समारोह के पश्चात् 100 परिवारों की अन्नदानम् से विभिन्न परिवारों द्वारा भक्ति की गई। निराश्रित एवं दिव्यांग जनों को एक महिने का राशन इस माह भी सम्मान पूर्वक प्रदान किया गया। तमिल जनों को जैन धर्म का परिचय एवं नवकार मंत्र का उच्चारण लक्ष्मण कवाड ने करवाया। संपूर्ण कार्यक्रम का सुनहरा लाभ शासन प्रेमी गुप्त परिवार ने लिया।

'श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना चतुर्थ शिविर - नि:शुल्क दंत जागरुकता, जाँच एवं परामर्श'

कर्नाटक राज्योत्सव दिवस पर श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् व महिला परिषद् (बसवनगुडी, बैंगलोर शाखा) संयुक्त रूप से The Tooth Hub क्लिनिक के सहयोग से श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना श्रृंखला के चतुर्थ नि:शुल्क जागरूकता, जाँच एवं परामर्श शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक संपंन किया।

युवा परिषद् के सलाहकार कैलाश संकलेचा ने बताया की मौखिक स्वास्थ्य व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस विशेष दंत शिविर का देख रेख और संचालन ऑर्थोडोंटिस्ट डॉ. गौरव जिनाणी के नेतृत्व में किया गया। शिविर का आयोजन सम्पूर्ण प्रकार से सुसज्जित V-V- Puram] बैंगलोर में स्थित The Tooth Hub क्लिनिक के परिसर हुआ। डॉ. गौरव बताते है की जब बैक्टीरिया (प्लाक) मुंह में चीनी के संपर्क में आते हैं, तो इसके परिणामस्वरूप अंतत: दांत खराब हो जाते हैं। अतिरिक्त शक्कर अक्सर शीतल पेय, कैंडीज, कुकीज, पेस्ट्री में मौजूद होती है और इसलिए चीनी की खपत को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए किसी को खाद्य लेबल पढ़ना चाहिए और सही खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थों का चयन करना चाहिए जिनमें अतिरिक्त चीनी की मात्रा कम हो।

स्वास्थ्य योजना संयोजक पंकज बाफना एवं गौतम कोठारी ने बताया की दंत शिविर में व्यापक दंत परामर्श, दांतों की जांच, एक्स-रे, स्केलिंग आदि सेवाओं को नि:शुल्क प्रदान किया गया। डॉ. गौरव की विशेषज्ञ टीम मरीजों को दांतों की सड़न, मसूड़ों की बीमारियों और उनसे बचाव के उपायों के बारे में भी मार्गदर्शन किया।

शिविर के प्रतिभागियों को विविध डेंटल ट्रीटमेंट पर 20-30% तक विशेष छूट उपलब्ध करवाया गया जो अन्यथा नियमित दंत चिकित्सालयों में नहीं मिलती है। कैविटी के इलाज के लिए फिलिंग, सड़े दाँत को निकालना, रूट कैनाल थेरेपी, डेन्चर, ब्रेसिज और बहुत सारे ट्रीटमेंट्स पर छूट के लिए आयोजकों ने टाई-अप किया। कई पंजीकृत प्रतिभागी दंत स्वास्थ्य के बारे में डॉक्टर से अपनी समस्या पर भी चर्चा की एवं Second Opinion भी लिया। स्कूलों के अवकाश दिन आयोजित इस दंत शिविर को महिला परिषद् की अध्यक्ष रीटा पारख ने स्कूल जाने बच्चों के लिए एक शानदार अवसर बताया है। महामंत्री आरती जैन ने सभी माताओं से अपने बच्चों में दांतों की सड़न, सामान्य दंत रोगों के बचाव करने के लिए हर छह महीनों में दांत चेकअप करवाने के फायदें बतायें। पूर्व में डॉक्टर-वर्तमान में बिल्डर, वलमार्क समूह के महावीर गुलेच्छा ने इस पर बात जोर देते हुए कहा कि हम रोजाना जिदगी में दिन में केवल एक बार ही ब्रश सुबह करते हैं, जबकि खाना खाने के बाद भी हमें ब्रश करना चाहिए, क्योंकि खाने के कुछ पदार्थ हमारे दांतो के बीच रह जाते हैं जिनका बाहर निकलना बेहद जरूरी होता है। अगर यह दांतों के बीच रह जाएंगे तो कीटाणु बनकर हमारे दांतों को खराब करेंगे।

शरीर के अन्य अंग के साथ दांतों की हिफाजत करना भी आवश्यक है। श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य शिविर में समाज के सभी वर्ग आमंत्रित रहते है। युवा परिषद् के अध्यक्ष भरत रांका ने बताया की सुचारु व्यस्वस्था हेतु रेजिस्ट्रेशन प्रक्रिया को दस दिन पूर्व से शुरू किया और पहले आओ, पहले पाओ की आधार पर अपॉइंटमेंट दिए गये। सुबह दस से शाम आठ बजे तक चले शिविर में 100 से अधिक लाभान्वित हुए।

श्री मणिप्रभ स्वास्थ्य योजना के इस चतुर्थ शिविर के प्रायोजक समाज कल्याण कार्यों में सैदव आग्रणीय रहने वाले मरुधर में मोकलसर प्रवासी, हाल बैंगलोर निवासी संघवी श्रीमती ललितादेवी पुखराजजी पालरेचा (P.H.SHAH) परिवार M/s Shah Group बैंगलोर रहे। यह जानकारी युवा परिषद् के महामंत्री कल्पेश लुंकड दी।

बालोतरा....

बालोतरा -3 अक्टूबर -ज्ञान सर्वदा सर्वत्र और सभी के लिए पूजनीय है। ज्ञान के साथ-साथ ज्ञानदाता और ज्ञान के उपकरण भी वंदनीय है। इस दुनिया में ज्ञानवर्धक पुस्तकें ही इंसान की सबसे अच्छी मित्र है, जो सुख-दुख में सतत सही राह दिखलाती है। ज्ञान से ही जीवन में संस्कारों का रोपण होता है।

जिला न्यायाधीश सिद्धार्थदीप रणुजा तीर्थ के पावन प्रांगण में त्रिदिवसीय हृदय परिवर्तन संस्कार शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि समय के साथ पदार्थ पुराने होते जाते हैं क्योंकि उनका वर्ण गंध, रस और स्पर्श पल -प्रतिपल बदलता रहता है परंतु ज्ञान कभी भी पुराना नहीं होता उसके पुनरावर्तन से नित्य नवीन ताजगी का आभास होता है। इस संस्कार शिविर में बालक बालिकाओं ने जो स्मरण सुनाएं मैं उससे काफी प्रभावित हुआ हूं निश्चित तौर पर यह शिविर जीवन परिवर्तन की मुख्य कड़ी बनेगा। साध्वी प्रियारंजनाश्री ने कहा कि समय को समझना जरूरी है क्योंकि समय को समझे बिना जीवन को नहीं समझा जा सकता समय है तो जीवन है अगर समय नहीं तो जीवन भी नहीं। यह शिविर बालक बालिकाओं के लिए जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण उपक्रम है यहां शिविरार्थियों ने गवली प्रतियोगिता, एक मिनट, नरक का दृश्य, जाने अपने आप को, जैन न्यूज, मौन, सामायिक, गुरु वंदन, परमात्मा की पूजा के साथ अनेक धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लिया। बेस्ट शिविरार्थि का पुरस्कार पूजा बोहरा एवं मौन में मोनिका चौकसी अव्वल रही। सभी शिविरार्थियों को सांत्वना पुरस्कार लाभार्थी परिवार अशोक कुमार पवन कुमार लुकड़ पुरुषोत्तम दास हीरालाल धारीवाल द्वारा प्रदान किए गए। समारोह में ओसवाल समाज के अध्यक्ष शांतिलाल डागा का साफा तिलक से अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि जिला न्यायाधीश सिद्धार्थदीप का क अध्यक्ष अभिषेक गोलछा, संजय कुमार चोपड़ा, बाड़मेर खरतरगच्छ संघ के प्रकाश मेहता, प्रकाश मालू, बालोतरा खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष अमृत सिंघवी, उपाध्यक्ष मूलचंद महाजन, नरेश मेहता, पदम सिंघवी, जवेरीलाल चोपड़ा, मनीष, ने साफा, तिलक ,श्रीफल से अभिनंदन किया। समारोह में खरतरगच्छ महिला परिषद एवं खरतरगच्छ युवक परिषद की शिविर में शानदार व्यवस्था के लिए बधाई दी गई। समारोह का शानदार संचालन सुप्रसिद्ध संगीतकार कोमल गोलेछा ने एवं आभार के केयुप अध्यक्ष अभिषेक गोलेछा ने ज्ञापित किया। शिविर में सेतरावा, बाड़मेर, धोरीमना, पाली, धनारी के साथ बालोतरा के बालक बालिकाओं ने भाग लिया।

पाली में महोत्सव

पाली नगर में पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी वर्या श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की 125वीं जन्म जयंती एवं कुशल वाटिका तीर्थ प्रेरिका वर्धमान तपाराधिका गुरुवर्या परम पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के वर्धमान तप स्वर्णोत्सव निमित्ते ता. 18 से 20 नवम्बर तक त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया है।

यह समारोह पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आगमरूचिश्रीजी म. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में संपन्न होगा। समारोह के अन्तर्गत प्रथम दिन ता. 18 को पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा पढाई जायेगी। ता. 19 को आचार्य सिद्धसेन दिवाकर सूरि रचित श्री कल्याण मंदिर महापूजन व ता. 20 को आचार्य जिनमणिप्रभसूरि ग्रथित श्री दादा गुरुदेव का महापूजन पढाया जायेगा। यह समारोह श्री जिनकुशलसूरि जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, पाली के तत्वावधान में संपन्न होगा।

सुविहित प्रकाशन परिचय

-मुनि विरक्तप्रभसागर

पुस्तक-**सुधारस** पुष्प-139

रचनाकार-आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

प्रकाशन वर्ष-2023 संस्करण-आँठवा

मूल्य-500 रु पृष्ठ संख्या-248

विषय-स्तवन, स्तुति, सज्झाय

विषय विवरण-पूज्य गच्छाधिपतिश्री जिनमणिप्रभसूरि का अद्‌भुत काव्य कौशल इसमें निहारने को मिलता है।

इसमें कुल तीन विभाग बनाये गये हैं। जिसमें प्रथम स्तवन विभाग में कुल 43 स्तवन दिये गये हैं।

चौबीस तीर्थंकरों के स्तवन, ओली, पर्युषण, वर्षीतप, दीपावली आदि पर्वों के स्तवन समाविष्ट हैं।

द्वितीय स्तुति विभाग में एकम से पूनम, अमावस्या तक की स्तुतियों के साथ-साथ नवपद एवं पयुर्षण की स्तुति को भी जिसमें समावेश किया गया है।

तृतीय सज्झाय विभाग में कुल 86 उपदेशक, महापुरुषों के जीवन पर, पर्व दिनों पर आधारित सुन्दर शब्दावली की सुरावली से युक्त सज्झायों का संग्रह किया है। यह कृतियाँ आचार्यश्री के परमात्म-प्रीति, आत्म-जागृति के सुन्दर भावों को प्रगट करती है।

पुस्तक-**स्तोत्र वाटिका** पुष्प-95

संपादन-आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

प्रकाशन वर्ष-2022 संस्करण-पाँचवा

मूल्य- 25 रु पृष्ठ संख्या-400

विषय-स्तोत्रों का संग्रह

विषय विवरण-लघु आकार की इस पुस्तिका में पूज्य आचार्यश्री ने दैनिक पठनीय मंत्रगर्भित, अतिप्रभावशाली, ऊर्जासंपन्न स्तोत्रों का सम्पदान किया है।

आत्मरक्षा स्तोत्र, सप्तस्मरण, भक्तामर, ऋषिमंडल, गौतमरास, शत्रुंजयरास आदि छोटे-बडे कुल 34 स्तोत्रों को संग्रहित किया है।

स्तोत्रों के अक्षर भी इस योग्य रखें है कि आबाल वृद्ध हर कोई सुगमता से पढ़ सकें।

नित्य आराधना में अत्यन्त उपयोगी यह पुस्तिका है।

पुस्तक-**करुणा निधान** पुष्प-227

रचनाकार-उपाध्याय मनितप्रभसागर

प्रकाशन वर्ष-2021 संस्करण-द्वितीय

मूल्य-40 रु पृष्ठ संख्या-142

विषय-चैत्यवंदन, स्तवन संग्रह

विषय विवरण-परमात्मा भक्ति के स्तवनों से परिपूर्ण यह प्रकाशन प्रभु प्रीति को विकसित कराने का सुन्दर आधार है।

उपाध्याय भगवन्त के द्वारा रचित तीर्थंकरो के चैत्यवंदन, स्तुति एवं स्तवन के साथ ही गौतम स्वामी तथा दादागुरुदेव के छंद, स्तवनों से युक्त यह च्वबामजै प्रम इववा भक्ति साहित्य की अनमोल कृति है।

जटाशंकर

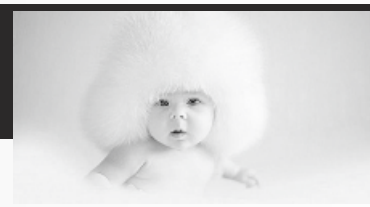

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर को ससुराल जाना था। विवाह के बाद पहली बार जा रहा था।

मां ने कहा- बेटा! तूं ससुराल जा रहा है। वहाँ बहुत सावधान रहना। मान-सम्मान कम नहीं होना चाहिये। मैं जानती हूँ कि तुझे भूख बहुत लगती है। और 40 रोटियों के बिना तुम्हारा पेट नहीं भरता। पर ससुराल में इतनी रोटियाँ खाओगे तो वहाँ सब क्या सोचेंगे! वे तुम्हें पेटू मानेंगे। तुम्हारी मजाक होगी। इसलिये वहाँ थोडा भूखा रह जाना पर पांच या छह से ज्यादा रोटियाँ मत खाना।

और हाँ! ससुराल वाले ज्यादा ही मनुहार करे तो आधी रोटी लेना, पर पूरी रोटी हरगिज मत लेना।

जटाशंकर ने मां की हिदायत सुनी तो परेशान हो गया। उसे अभी से ही भूख लग गयी। पर मां की बात तो माननी ही थी। वह बहुत ही बेमन से ससुराल गया।

भोजन का समय होने पर थाल परोसा गया। जमाईसा पहली बार आये थे, तो घर के सारे सदस्य आवभगत में लगे थे। एक एक रोटी गरम गरम परोस रहे थे।

जटाशंकर की भूख और तेज हो गई थी। ऊपर से रोटियाँ भी बहुत पतली पतली आ रही थी। छह रोटियाँ तो पल भर में पूरी हो गई। सातवीं रोटी ज्योंहि परोसने लगे, तभी उसे मां की हिदायत याद आई।

उसने बेमन से मना किया। अब नहीं लूंगा... बिल्कुल नहीं...!

साले साहब ने बहुत मनुहार की। जटाशंकर ने जब बिल्कुल मना किया तो साले साहब ने कहा- चलो मैं आया हूँ तो मेरा मान रखने के लिये आधी रोटी तो लेनी ही होगी।

जटाशंकर ने सोचा- मां ने आधी रोटी लेने के लिये कहा था। उसने मां की हिदायत और अपनी भूख इन दोनों का मिश्रण करते हुए कहा- आधी आधी तो 70 रोटियाँ ले आओ। पूरी एक भी नहीं चलेगी।

यह सुनकर ससुराल के सारे लोग हँस पडे।

आधे से कैसे काम चलेगा! काम तो पूरा ही करना होगा, तभी परिणाम मिलता है। धर्म आराधना का परिणाम तभी प्राप्त होता है, जब पूर्ण श्रद्धा के साथ पूरे मन से की जाती है।

गुणायाजी तीर्थ में सूरिमंत्र साधना मंदिर का मुहूर्त्त

परमात्मा महावीर के प्रथम शिष्य अनंत लब्धि निधान गणधर श्री गौतमस्वामी की केवलज्ञान भूमि श्री गुणायाजी तीर्थ का आमूलचूल जीर्णोद्धार हो रहा है। परमात्मा महावीर के चौमुख मंदिर एवं गणधर गौतमस्वामी मंदिर का भूमिपूजन, खननमुहूर्त्त व शिलान्यास समारोह संपन्न हो गया है। जीर्णोद्धार कार्य तीव्र गति से चल रहा है।

इस तीर्थ के आमूलचूल जीर्णोद्धार में जिन मंदिर, गणधर मंदिर के साथ साथ सूरिमंत्र साधना का भव्य निर्माण होने जा रहा है। जहाँ आचार्य भगवंत पधार कर सूरिमंत्र की पीठिका साधना करेंगे।

साथ ही यहाँ विशाल म्यूझियम, धर्मशाला, भोजनशाला, उपाश्रय आदि विशाल भवनों का निर्माण भी संपन्न होगा।

सूरिमंत्र साधना मंदिर का शुभ मुहूर्त्त गणधर गौतमस्वामी केवलज्ञान दिवस के पावन अवसर पर ता. 14 नवम्बर 2023 मंगलवार को संपन्न होने जा रहा है। खात मुहूर्त्त का लाभ नैनावा निवासी कटारिया संघवी श्री मिश्रीमलजी नथमलजी परिवार रत्नमणि ग्रुप ने प्राप्त किया है।

।। श्री महावीराय नमः ।। ।। श्री शांतिनाथाय नमः ।। ।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त मणिधारी जिनचन्द्र जिनकुशल जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ–मुंबई

के तत्वावधान में

आसोज मास की शाश्वती नवपदजी की ओली

आमंत्रण

आदरणीय महानुभावों,

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ- मुंबई द्वारा आगामी आसोज मास की शाश्वती नवपदजी की ओली तप का आयोजन किया गया है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है:-

आज्ञा प्रदाता

प.पू. खरतरगच्छाधिपति युग दिवाकर आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्य कृपा

प.पू. आत्मसाधिका साध्वीजी श्री अनुभवश्रीजी म.सा.
जै जगतस्य सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री गुरुवर्या
प.पू. साध्वीजी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.

श्रेयस्कारी निश्रा

सरल स्वभाविका संयम साधिका प.पू. साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. की निश्रावर्ती
प.पू. साध्वी श्री प्रशमिताश्रीजी म.सा., प.पू. साध्वीजी श्री अर्हमनिधिश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वीजी श्री भव्यप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

ओली तप प्रारंभ
आसोज सुदी 6
शुक्रवार
20.10.2023

ओली तप पुर्णाहुति
आसोज सुदी 15
शनिवार
28.10.2023

ओली तप परणा
आसोज वद 1
रविवार
29.10.2023

ओली तप एवं पारणा

75/77 खरतरगच्छ भवन, नियो ओरनेट, 2रा माला, नानुभाई देसाई रोड़, मुंबई-4

आप सभी धर्मप्रेमी भाईयों एवं बहिनों से अनुरोध है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में आयंबिल ओली की तपस्या करके धर्म आराधना का लाभ अवश्य लेवें।

लाभार्थी परिवार

श्रीमती तगीदेवी नारायणमलजी श्रीश्रीश्रीमाल मोलाणी

सुपुत्र : मफतलाल, अखराज, पवनराज, सांचौर–मुंबई

नाम लिखवाने हेतु संमर्क करें

कांतिलाल बोकडिया	सुमेरमल वाघेला	पवनराज श्रीश्रीश्रीमाल	चंपालाल श्रीश्रीमाल	ललित श्रीश्रीश्रीमाल
9322285962	9821038703	9869318075	9820979121	9867892111

नोटः- ओलीजी के आराधकों की संख्या सीमित रहेगी। पहले आए पहले पाए के आधार पर नाम लिखे जाएंगे।

...निवेदक...

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-मुंबई

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद्, अखिल भारतीय खरतरगच्छ बालिका परिषद्

75/77 खरतरगच्छ भवन, नियो ओरनेट, 2रा माला, नानुभाई देसाई रोड़, मुंबई-4

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

93145 10196, 96026 23456

श्री पार्श्वनाथाय नमः

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

जैन परिवारों के वैवाहिक रिश्तों की खुशियों का मंडप

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरतंर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते है। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हों अर्थात् प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते है। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध है। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आईपीएस हो या राजनीतिक, समाजसेवा के क्षेत्र से हो देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र, हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है । संकोच नहीं , सम्पर्क करें

पदमचंद जैन 9314510196

प्रोफेशनल, सी.ए., पायलट, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैनिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखें वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

जैन-वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

इंटरनेशनल जैन एण्ड वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-बी, एपी अपार्टमेंट, खरबूजा मंडी, वैभव लॉन के सामने, एमडी रोड़, जयपुर-04

93145 10196, 96026 23456

सेवा के सरोकार **शिक्षा, छात्रवृत्ति, चिकित्सा, रोजगार, विधवा पेंशन**

सभी साधर्मिक जैन परिवारों के आवेदकों की सभी जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए. जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि़ा जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408